Sample

वैदिक ज्योतिष कुण्डली

Abhimanue Singh

Mindsutra Software Technologies

www.mindsutra.com

www.saarcastro.org

mindsutra@gmail.com

Contact - 09818193410, 09350247058

Sample DOB-18:10:1978 TOB-11:00:00 POB-New Delhi

ग्रह स्थिति

ग्रह		राशि	राशि	डिग्री	नक्षत्र – चरन	न0 पति	सप्तकारक	विशेष	विशेष
AC	लग्न	वृश्चिक	मंगल	29:32:28	ज्येष्ठा.4	बुध	...	...	...
☉	सूर्य	तुला	शुक्र	00:55:32	चित्रा.3	मंगल	दारा	नीचस्थ	शुभ ग्रह के साथ
☽	चन्द्रमा	मेष	मंगल	25:20:31	भरणी.4	शुक्र	भ्रात्रि	मित्र के भाव में	––
♂	मंगल	तुला	शुक्र	25:54:52	विशाखा.2	गुरू	अमात्य	तटस्थ भाव में	शुभ ग्रह के साथ
☿	बुध	तुला	शुक्र	12:44:41	स्वाति.2	राहु	ज्ञाति	मित्र के भाव में	शुभ ग्रह के साथ
♃	गुरू	कर्क	चन्द्रमा	13:11:00	पुष्य.3	शनि	अपत्या	तटस्थ भाव में	––
♀	शुक्र व	तुला	शुक्र	29:14:43	विशाखा.3	गुरू	आत्म	स्वग्रही	शुभ ग्रह के साथ
♄	शनि	सिंह	सूर्य	16:32:48	पुर्वफाल्गुनी.1	शुक्र	मात्रि	शत्रु के भाव में	––
☊	राहु व	कन्या	बुध	01:37:30	उत्तरफाल्गुनी.2	सूर्य	...	तटस्थ भाव में	––
☋	केतु व	मीन	गुरू	01:37:30	पूर्वाभाद्र.4	गुरू	...	तटस्थ भाव में	––
⊗	हर्षल	तुला	शुक्र	21:47:39	विशाखा.1	गुरू	...	––	शुभ ग्रह के साथ
♆	नेपच्यून	वृश्चिक	मंगल	22:40:43	ज्येष्ठा.2	बुध	...	––	––
♇	प्लूटो	कन्या	बुध	23:21:11	चित्रा.1	मंगल	...	––	ज्वलित

लग्न कुण्डली

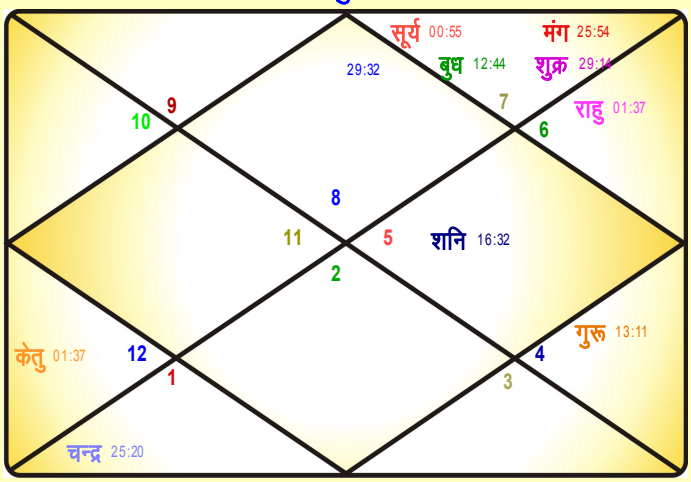

नवांश कुण्डली

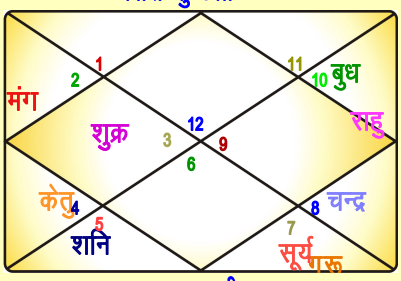

चन्द्र कुण्डली

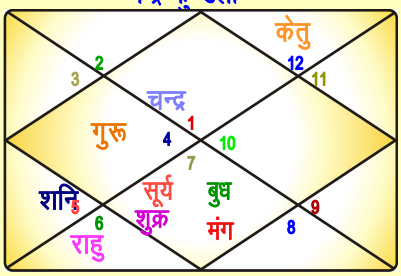

ग्रह से ग्रह और ग्रह से लग्न के बीच की दूरी

	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	---	301	146	326	313	224	330	257	272	92	322	353	294
सूर्य	59	---	204	25	12	282	28	316	331	151	21	52	352
चन्द्रमा	214	156	---	181	167	78	184	111	126	306	176	207	148
मंगल	34	335	179	---	347	257	3	291	306	126	356	27	327
बुध	47	348	193	13	---	270	17	304	319	139	9	40	341
गुरू	136	78	282	103	90	---	106	33	48	228	99	129	70
शुक्र	30	332	176	357	343	254	---	287	302	122	353	23	324
शनि	103	44	249	69	56	327	73	---	15	195	65	96	37
राहु	88	29	234	54	41	312	58	345	---	180	50	81	22
केतु	268	209	54	234	221	132	238	165	180	---	230	261	202
हर्षल	38	339	184	4	351	261	7	295	310	130	---	31	332
नेपच्यून	7	308	153	333	320	231	337	264	279	99	329	---	301
प्लूटो	66	8	212	33	19	290	36	323	338	158	28	59	---

0,1,359	कन्जक्शॅन	59,60,61,299,300,301	सेक्सटाइल	89,90,91,269,270,271	स्कवायर
119,120,121,239,240,241	ट्राइन	149,150,151,209,210,211	क्वीनकक्सं	179,180,181	अपोजीसन

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

Sample DOB-18:10:1978 TOB-11:00:00 POB-New Delhi

भाव स्फूट और कुण्डली

भाव सॅख्या	भाव मध्य		भाव विस्तार (आरम्भ—अन्त)			
I	वृश्चिक	029:32:28	वृश्चिक	16:47:34	धनु	16:47:34
II	धनु	004:02:40	धनु	16:47:34	मकर	21:17:46
III	मकर	008:32:52	मकर	21:17:46	कुम्भ	25:47:58
IV	कुम्भ	013:03:05	कुम्भ	25:47:58	मीन	25:47:58
V	मीन	008:32:52	मीन	25:47:58	मेष	21:17:46
VI	मेष	004:02:40	मेष	21:17:46	वृष	16:47:34
VII	वृष	029:32:28	वृष	16:47:34	मिथुन	16:47:34
VIII	मिथुन	004:02:40	मिथुन	16:47:34	कर्क	21:17:46
IX	कर्क	008:32:52	कर्क	21:17:46	सिहं	25:47:58
X	सिहं	013:03:05	सिहं	25:47:58	कन्या	25:47:58
XI	कन्या	008:32:52	कन्या	25:47:58	तुला	21:17:46
XII	तुला	004:02:40	तुला	21:17:46	वृश्चिक	16:47:34

लग्न कुण्डली

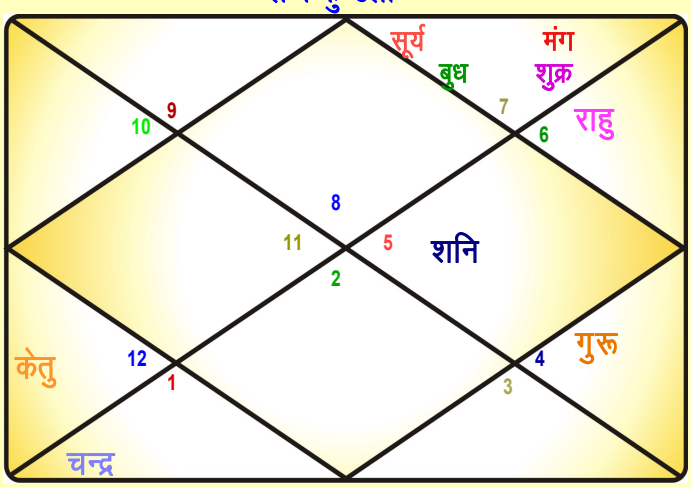

भाव कुण्डली

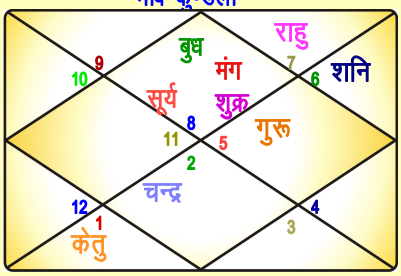

भाव चलित कुण्डली

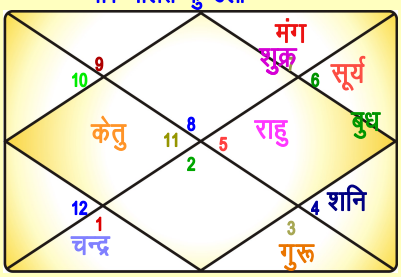

ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	**301**	146	326	313	224	330	257	272	92	322	353	294
दूसरा भाव	267	111	292	279	189	295	223	238	58	288	319	259
तीसरा भाव	232	77	257	244	155	261	188	203	23	253	284	225
नादिर	198	42	223	**210**	**120**	226	153	169	349	219	250	190
पॉचवा भाव	172	17	197	184	95	201	128	143	323	193	224	165
छठवा भाव	147	351	172	159	69	175	103	118	298	168	199	139
सातॅवा भाव	**121**	326	146	133	44	**150**	77	92	272	142	173	114
आठवा भाव	87	291	112	99	9	115	43	58	238	108	139	79
नवा भाव	52	257	77	64	335	81	8	23	203	73	104	45
एम सी	18	222	43	30	**300**	46	333	349	169	39	70	10
ग्यारहवा भाव	352	197	17	4	275	21	308	323	143	13	44	345
बारहवा भाव	327	171	352	339	249	355	283	298	118	348	19	319

0,1,359	0,१,३५९ कन्जक्शॅन	59,60,61,299,300,301	सेक्सटाइल	89,90,91,269,270,271 स्कवायर
119,120,121,239,240,241	ट्राइन	149,150,151,209,210,211	क्वीनकक्सं	179,180,181 अपोजीसन

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

ग्रह मैत्रि चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह		सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	....	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
☽	चन्द्रमा	मित्र	....	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
♂	मंगल	मित्र	मित्र	....	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
☿	बुध	मित्र	शत्रु	सम	....	सम	मित्र	सम	सम	सम
♃	गुरू	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	....	शत्रु	सम	मित्र	सम
♀	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	....	मित्र	मित्र	मित्र
♄	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	....	मित्र	मित्र
☊	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र	....	सम
☋	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	....

तत्कालिक मैत्री

ग्रह		सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	....	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
☽	चन्द्रमा	शत्रु	....	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
♂	मंगल	शत्रु	शत्रु	....	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
☿	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	....	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
♃	गुरू	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	....	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
♀	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	....	मित्र	मित्र	शत्रु
♄	शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	....	मित्र	शत्रु
☊	राहु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	....	शत्रु
☋	केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	....

पचंधा मैत्री

ग्रह		सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	....	सम	सम	शत्रु	अधिमित्र	अधिशत्रु	सम	सम	अधिशत्रु
☽	चन्द्रमा	सम	....	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
♂	मंगल	सम	सम	....	अधिशत्रु	अधिमित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम
☿	बुध	सम	अधिशत्रु	शत्रु	....	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
♃	गुरू	अधिमित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	....	सम	मित्र	अधिमित्र	शत्रु
♀	शुक्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	सम	मित्र	....	अधिमित्र	अधिमित्र	सम
♄	शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अधिमित्र	मित्र	अधिमित्र	....	अधिमित्र	सम
☊	राहु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	....	शत्रु
☋	केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	शत्रु	....

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

Sample DOB-18:10:1978 TOB-11:00:00 POB-New Delhi

षोडश वर्ग

लग्न(जन्म) कुण्डली

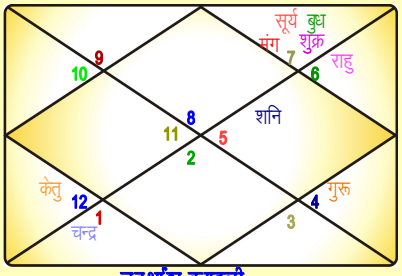

होरा कुण्डली

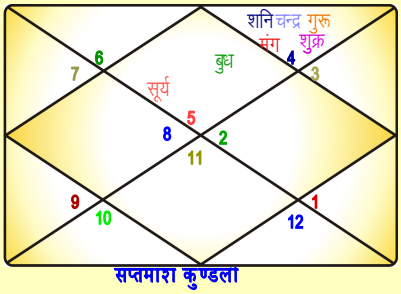

द्रेष्काण कुण्डली

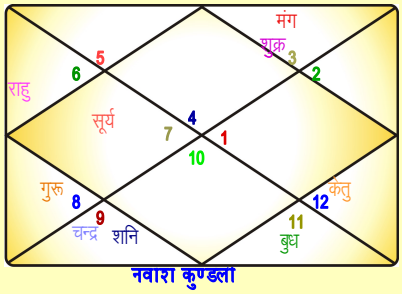

चतुर्थांश कुण्डली

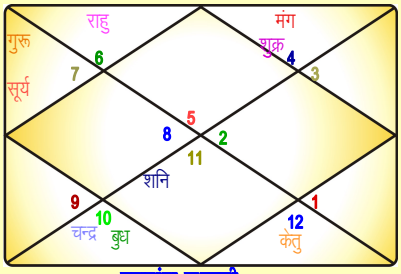

सप्तमांश कुण्डली

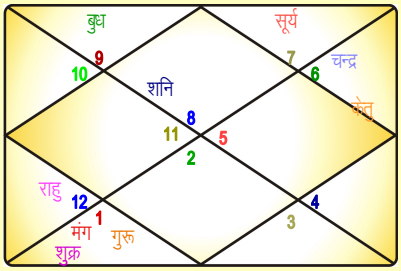

नवांश कुण्डली

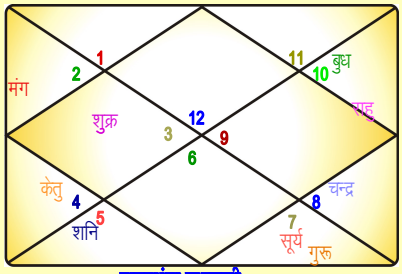

दशमांश कुण्डली

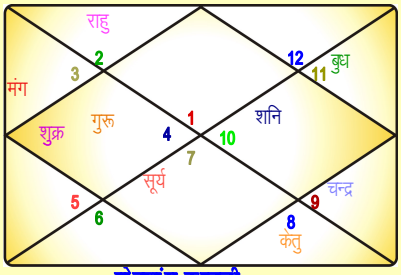

द्वादशांश कुण्डली

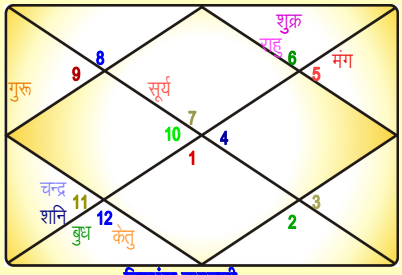

D1	मुख्य कुण्डली, सभी मुद्दों के लिए
D2	धन दौलत के लिए
D3	सहोदरों का जीवन और स्वास्थ्य
D4	भाग्य और स्थायी मकान
D7	संतान और उनकी संतान
D9	जीवनसाथी और उनका स्वास्थ्य
D10	कारोबार और किसी भी कार्य में सफलता
D12	माता-पिता का जीवन और स्वास्थ्य
D16	वाहन से संबंधित बातें
D20	अध्यात्मिक ज्ञान
D24	शिक्षा, ज्ञान और समझ
D27	ताकत और दुर्बलता
D30	दरिद्रता, कठिनाईयां और दुर्गति
D40	शुभ-अशुभ घटनाएं
D45	सभी मुद्दों के लिए
D60	सभी मुद्दों के लिए

षोडशांश कुण्डली

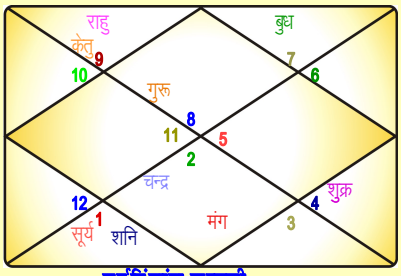

विशांश कुण्डली

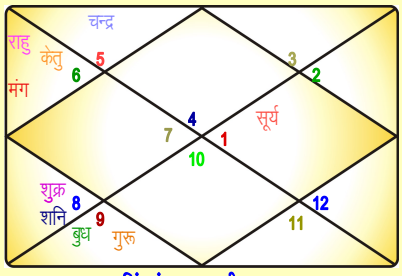

चतुर्विंशांश कुण्डली

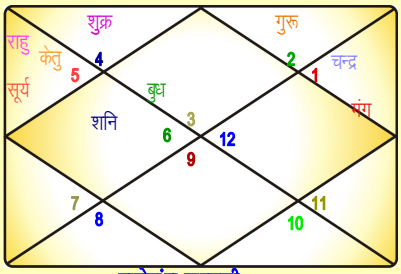

सप्तविंशांश कुण्डली

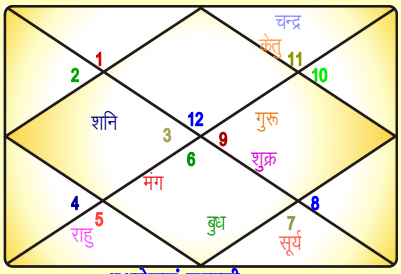

त्रिंशांश कुण्डली

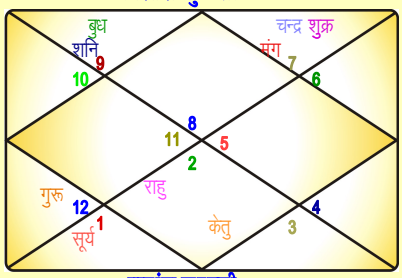

खवेदांश कुण्डली

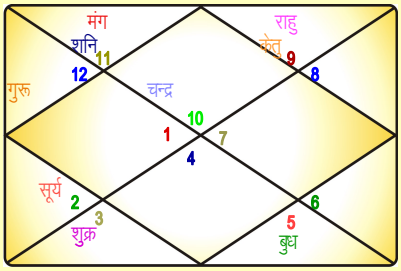

अक्षवेदांश कुण्डली

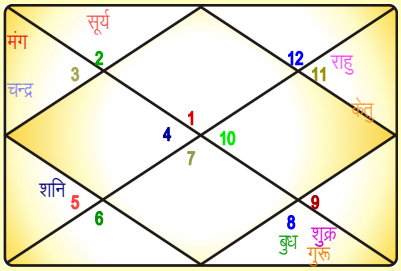

षष्ठांश कुण्डली

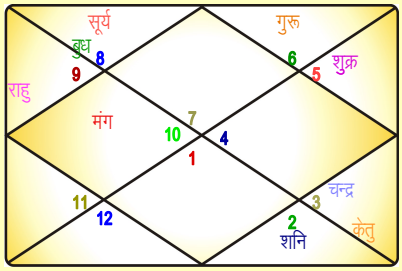

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

Sample DOB-18:10:1978 TOB-11:00:00 POB-New Delhi

षड्बल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उच्च बल	03.02	57.45	29.30	50.75	57.27	10.75	38.85
सप्त वर्ग बल	46.88	67.50	58.13	90.00	157.50	88.13	84.38
युग्म अयुग्म बल	30.00	15.00	15.00	15.00	15.00	00.00	30.00
केन्द्रादी बल	15.00	15.00	15.00	15.00	15.00	15.00	60.00
द्रेक्कन बल	15.00	15.00	00.00	15.00	00.00	15.00	15.00
स्थान बल	**109.90**	**169.95**	**117.43**	**185.75**	**244.77**	**128.87**	**228.22**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	66.61	127.78	122.32	112.58	148.35	96.90	237.73
दिग बल	**54.04**	**45.90**	**45.71**	**44.40**	**14.55**	**15.40**	**34.33**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	154.41	91.81	152.37	126.86	41.56	30.80	114.44
नतोन्नत बल	54.42	05.58	05.58	54.42	00.00	54.42	05.58
पक्ष बल	08.14	51.86	08.14	08.14	51.86	51.86	08.14
त्रिभाग बल	60.00	00.00	00.00	00.00	60.00	00.00	00.00
वर्ष बल	15.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
मास बल	00.00	00.00	30.00	00.00	00.00	00.00	00.00
दिन बल	00.00	00.00	00.00	00.00	45.00	00.00	00.00
होरा बल	00.00	00.00	60.00	00.00	00.00	00.00	00.00
अयन बल	17.68	07.72	07.54	46.51	52.73	06.46	19.82
युद्ध बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
काल बल	**155.23**	**65.16**	**111.26**	**109.06**	**209.59**	**112.74**	**33.54**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	138.60	65.16	166.06	97.38	187.13	112.74	50.06
चेष्टा बल	**17.68**	**51.86**	**00.00**	**00.00**	**15.00**	**00.00**	**30.00**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	35.36	172.87	00.00	00.00	30.00	00.00	75.00
नैसर्गिक बल	**60.00**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**08.57**
द्रिक बल	**03.60**	**-04.36**	**-22.61**	**-00.84**	**-06.32**	**-23.44**	**-07.76**
कुल षड्बल	**400.45**	**379.95**	**268.93**	**364.10**	**511.88**	**276.42**	**326.91**
षड्बल (रूप में)	**6.67**	**6.33**	**4.48**	**6.07**	**8.53**	**4.61**	**5.45**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछनिय अंश	102.68	105.54	89.64	86.69	131.25	83.76	108.97
तुलनात्मक स्थिति	**2**	**3**	**7**	**4**	**1**	**6**	**5**
इष्ट फल	**08.13**	**54.58**	**00.00**	**00.00**	**29.31**	**00.00**	**34.14**
कष्ट फल	**51.87**	**05.42**	**60.00**	**60.00**	**30.69**	**60.00**	**25.86**
दिप्ति बल	**100.00**	**51.86**	**08.33**	**25.33**	**25.91**	**36.15**	**14.79**

भावबल

भाव सँख्या	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भाव राशि	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
भावाधिपति बल	268.93	326.91	326.91	511.88	268.93	276.42	276.42	379.95	400.45	364.10	276.42	268.93
भाव दिग्बल	00.00	50.00	10.00	30.00	50.00	20.00	30.00	10.00	10.00	60.00	40.00	50.00
भाव दृष्टि बल	-12.38	03.60	-14.13	-00.91	21.95	02.28	-30.29	-07.82	04.46	08.16	00.74	-12.21
भाव बल का योग	**256.55**	**380.51**	**322.77**	**540.97**	**340.88**	**298.70**	**276.13**	**382.13**	**414.91**	**432.26**	**317.16**	**306.72**
भाव बल (रूप में)	**4.28**	**6.34**	**5.38**	**9.02**	**5.68**	**4.98**	**4.60**	**6.37**	**6.92**	**7.20**	**5.29**	**5.11**
तुलनात्मक स्थिति	**12**	**5**	**7**	**1**	**6**	**10**	**11**	**4**	**3**	**2**	**8**	**9**

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

Sample DOB-18:10:1978 TOB-11:00:00 POB-New Delhi

भिन्न अष्टक वर्ग कुण्डली

शनि

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	
♄ शनि	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
♃ वह0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
♂ मगंल	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	6
☉ सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
♀ शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	3
☿ वध	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	6
☽ द्रमा	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
AC लग्न	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	6
योग	2	3	4	3	5	5	2	3	3	3	3	3	39

गुरू

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	
♄ शनि	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	4
♃ वह0	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
♂ मगंल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
☉ सूर्य	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	9
♀ शुक्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	6
☿ वध	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	8
☽ द्रमा	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	5
AC लग्न	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
योग	4	5	3	7	7	2	6	5	4	5	5	3	56

मंगल

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	
♄ शनि	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	7
♃ वह0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4
♂ मगंल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
☉ सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1	5
♀ शुक्र	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
☿ वध	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
☽ द्रमा	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
AC लग्न	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	5
योग	4	4	3	2	6	3	1	3	3	2	4	4	39

सूर्य

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	
♄ शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
♃ वह0	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	4
♂ मगंल	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
☉ सूर्य	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
♀ शुक्र	1	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	1	3
☿ वध	0	0	1	1	1	1	0	0	1	0	1	1	7
☽ द्रमा	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
AC लग्न	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	6
योग	5	4	5	3	5	5	3	4	2	4	4	4	48

शुक्र

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	
♄ शनि	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	7
♃ वह0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	5
♂ मगंल	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	6
☉ सूर्य	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	0	3
♀ शुक्र	0	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	0	9
☿ वध	0	0	1	0	1	0	0	0	1	0	1	1	5
☽ द्रमा	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	9
AC लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	8
योग	3	5	6	3	5	3	2	5	6	2	6	6	52

बुध

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	
♄ शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
♃ वह0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
♂ मगंल	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
☉ सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	1	5
♀ शुक्र	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	8
☿ वध	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	1	1	8
☽ द्रमा	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	6
AC लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
योग	3	5	7	3	6	5	3	5	4	3	7	3	54

चन्द्रमा

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	
♄ शनि	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
♃ वह0	1	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	7
♂ मगंल	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	7
☉ सूर्य	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	6
♀ शुक्र	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	7
☿ वध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	8
☽ द्रमा	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	0	6
AC लग्न	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
योग	6	3	5	5	5	2	4	1	5	6	5	2	49

लग्न

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	
♄ शनि	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	6
♃ वह0	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	9
♂ मगंल	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	5
☉ सूर्य	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	6
♀ शुक्र	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	7
☿ वध	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
☽ द्रमा	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	5
AC लग्न	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
योग	2	4	3	4	6	3	5	4	4	7	2	5	49

राहु

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	
♄ शनि	0	1	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	6
♃ वह0	0	0	0	1	0	1	1	0	1	0	1	0	5
♂ मगंल	1	0	0	0	0	1	0	1	1	0	1	0	5
☉ सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	0	1	0	7
♀ शुक्र	1	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
☿ वध	1	1	0	0	0	1	0	1	0	1	0	0	5
☽ द्रमा	1	0	1	0	1	0	1	1	1	1	0	0	7
AC लग्न	0	0	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	5
योग	5	3	2	4	2	4	5	4	5	3	5	2	44

कक्ष बल

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	
♄ शनि	4	5	7	1	4	2	5	5	4	4	3	4	48
♃ वह0	5	8	4	3	2	1	3	4	5	3	4	3	45
♂ मगंल	4	4	4	7	8	2	5	5	4	4	3	4	54
☉ सूर्य	4	5	3	6	8	3	3	3	4	4	2	4	49
♀ शुक्र	2	4	5	3	6	3	3	4	4	4	5	4	47
☿ वध	1	3	5	6	8	3	4	2	5	3	6	7	53
☽ द्रमा	2	3	6	2	2	6	2	2	2	4	8	2	41
AC लग्न	7	1	2	2	7	8	1	5	3	6	5	2	49
योग	29	33	36	30	45	28	26	30	31	32	36	30	86

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

सर्वाष्टक वर्ग से निष्कर्ष

सर्वाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	
♄ शनि	2	3	4	3	5	5	2	3	3	3	3	3	39
♃ बृहस्पति	4	5	3	7	7	2	6	5	4	5	5	3	56
♂ मगंल	4	4	3	2	6	3	1	3	3	2	4	4	39
☉ सूर्य	5	4	5	3	5	5	3	4	2	4	4	4	48
♀ शुक्र	3	5	6	3	5	3	2	5	6	2	6	6	52
☿ बुध	3	5	7	3	6	5	3	5	4	3	7	3	54
☽ चन्द्रमा	6	3	5	5	5	2	4	1	5	6	5	2	49
योग	27	29	33	26	39	25	21	26	27	25	34	25	337
AC लग्न	2	4	3	4	6	3	5	4	4	7	2	5	49
☊ राहु	5	3	2	4	2	4	5	4	5	3	5	2	44

तत्व चक्र

स0 क0 बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	शुभ दिशा
अग्नि त्रिकोन	84.25	93	पूर्व
पृथ्वी त्रिकोन	84.25	79	दक्षिण
वायु त्रिकोन	84.25	88	पश्चिम
जल त्रिकोन	84.25	77	उत्तर

)विशेष - सबसे ज़्यादा बिन्दु सबसे शुभ दिशा को इंगित करता है (पू, द, प और उ)। अगर दोनों भागों के बिन्दुओं की संख्या बराबर या आसपास हैं, तो शुभ दिशा (उ पू, दपू, उ प और दप) होगी।)

भुवन चक्र

स0 क0 बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	निष्कर्ष
केन्द्र भाव–राशि	112.33	128	मेहनत और लगन
पनफरा भाव–राशि	112.33	110	आर्थिक स्थिति
अपक्लिम् भाव–राशि	112.33	99	वित्त हानि

दिशा चक्र

भाग	स0 क0 बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	निष्कर्ष
बन्धुक	भाग्य त्रिकोन	84.25	77	बन्धु –बान्धवो से सहायता
सेवक	कर्म त्रिकोन	84.25	93	नौकरी से अर्जन
पोषक	लाभ त्रिकोन	84.25	79	लाभ और धन
घातक	व्यय त्रिकोन	84.25	88	दुर्भाग्य और हानि

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

Sample DOB-18:10:1978 TOB-11:00:00 POB-New Delhi

ग्रह स्थिति-कृष्णमूर्ति पद्धति

ग्रह	राशि	डिग्री	नक्षत्र – चरन	न0 पति	राशि प0	उप	उपउप	उउउ स0	विशेष
लग्न	वृश्चिक	29:38:16	ज्येष्ठा-४	बुध	मंगल	शनि	राहु	शुक्र	...
सूर्य	तुला	01:01:19	चित्रा-३	मंगल	शुक्र	बुध	मंगल	शुक्र	नीचस्थ
चन्द्रमा	मेष	25:26:19	भरणी-४	शुक्र	मंगल	बुध	गुरू	बुध	मित्र के भाव में
मंगल	तुला	26:00:39	विशाखा-२	गुरू	शुक्र	केतु	चन्द्रमा	गुरू	तटस्थ भाव में
बुध	तुला	12:50:29	स्वाती-२	राहु	शुक्र	बुध	केतु	शुक्र	मित्र के भाव में
गुरू	कर्क	13:16:48	पुष्य-३	शनि	चन्द्रमा	राहु	गुरू	बुध	तटस्थ भाव में
शुक्र व	तुला	29:20:31	विशाखा-३	गुरू	शुक्र	सूर्य	शुक्र	शुक्र	स्वग्रही
शनि	सिंह	16:38:36	पूर्वाफल्गुनी-१	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	गुरू	शुक्र	शत्रु के भाव में
राहु व	कन्या	01:43:18	उत्तराफल्गुनी-२	सूर्य	बुध	गुरू	शनि	गुरू	तटस्थ भाव में
केतु व	मीन	01:43:18	पूर्वाभाद्रपद-४	गुरू	गुरू	राहु	गुरू	बुध	तटस्थ भाव में
हर्षल	तुला	21:53:27	विशाखा-१	गुरू	शुक्र	शनि	शनि	केतु	––
नेपच्यून	वृश्चिक	22:46:30	ज्येष्ठा-२	बुध	मंगल	चन्द्रमा	शनि	शुक्र	––
प्लूटो	कन्या	23:26:59	चित्रा-१	मंगल	बुध	मंगल	राहु	केतु	––
फारच्यूना	मिथुन	24:03:15	पुनर्वसु-२	शनि	बुध	बुध	बुध	बुध	....

लग्न कुण्डली

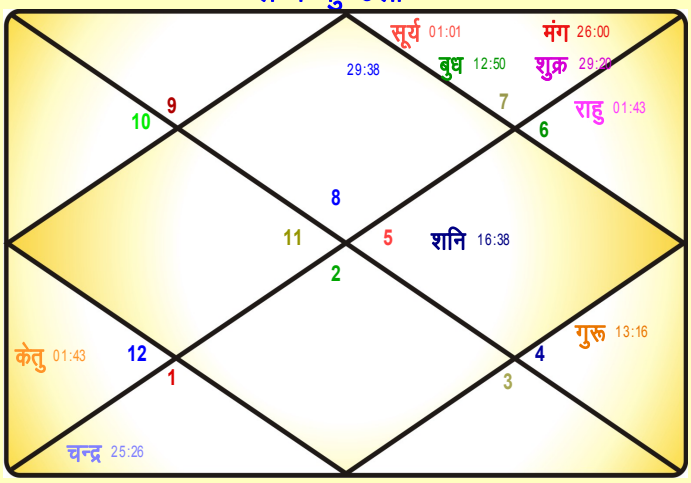

कृष्णमूर्ति भाव चलित

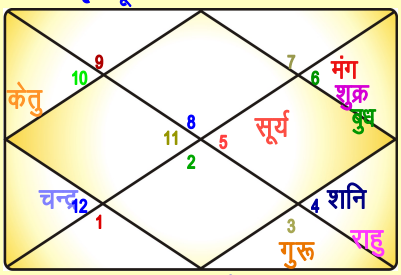

नवांश कुण्डली

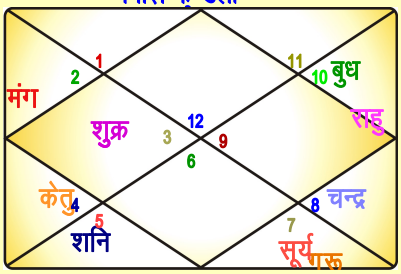

भाव विवरण – कृष्णमूर्ति पद्धति

भाव	राशि	डिग्री	नक्षत्र – चरन	न0 पति	राशि प0	उप	उपउप	उउउ स0
I	वृश्चिक	29:38:16	ज्येष्ठा-४	बुध	मंगल	शनि	राहु	शुक्र
II	धनु	02:33:48	उत्तराषाढ़-२	सूर्य	गुरू	गुरू	चन्द्रमा	शनि
III	मकर	08:38:09	शतभिषा-१	राहु	शनि	राहु	मंगल	शुक्र
IV	कुम्भ	13:08:52	उत्तराभाद्रपद-३	शनि	शनि	राहु	राहु	चन्द्रमा
V	मीन	12:24:27	अश्विनी-४	केतु	गुरू	बुध	मंगल	राहु
VI	मेष	07:00:54	कृत्तिका-४	सूर्य	मंगल	केतु	केतु	चन्द्रमा
VII	वृष	29:38:16	मृगशिर-२	मंगल	शुक्र	शनि	राहु	शुक्र
VIII	मिथुन	02:33:48	पुनर्वसु-४	गुरू	बुध	राहु	केतु	राहु
IX	कर्क	08:38:09	मघा-३	केतु	चन्द्रमा	गुरू	शुक्र	शनि
X	सिंह	13:08:52	हस्त-१	चन्द्रमा	सूर्य	राहु	केतु	शनि
XI	कन्या	12:24:27	स्वाती-२	राहु	बुध	शनि	गुरू	केतु
XII	तुला	07:00:54	अनुराधा-२	शनि	शुक्र	बुध	गुरू	राहु

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

Sample DOB-18:10:1978 TOB-11:00:00 POB-New Delhi

सुदर्शन चक्र

2/14/26/38/50/62/74/86/98/110 1/13/25/37/49/61/73/85/97/109 12/24/36/48/60/72/84/96/108/120

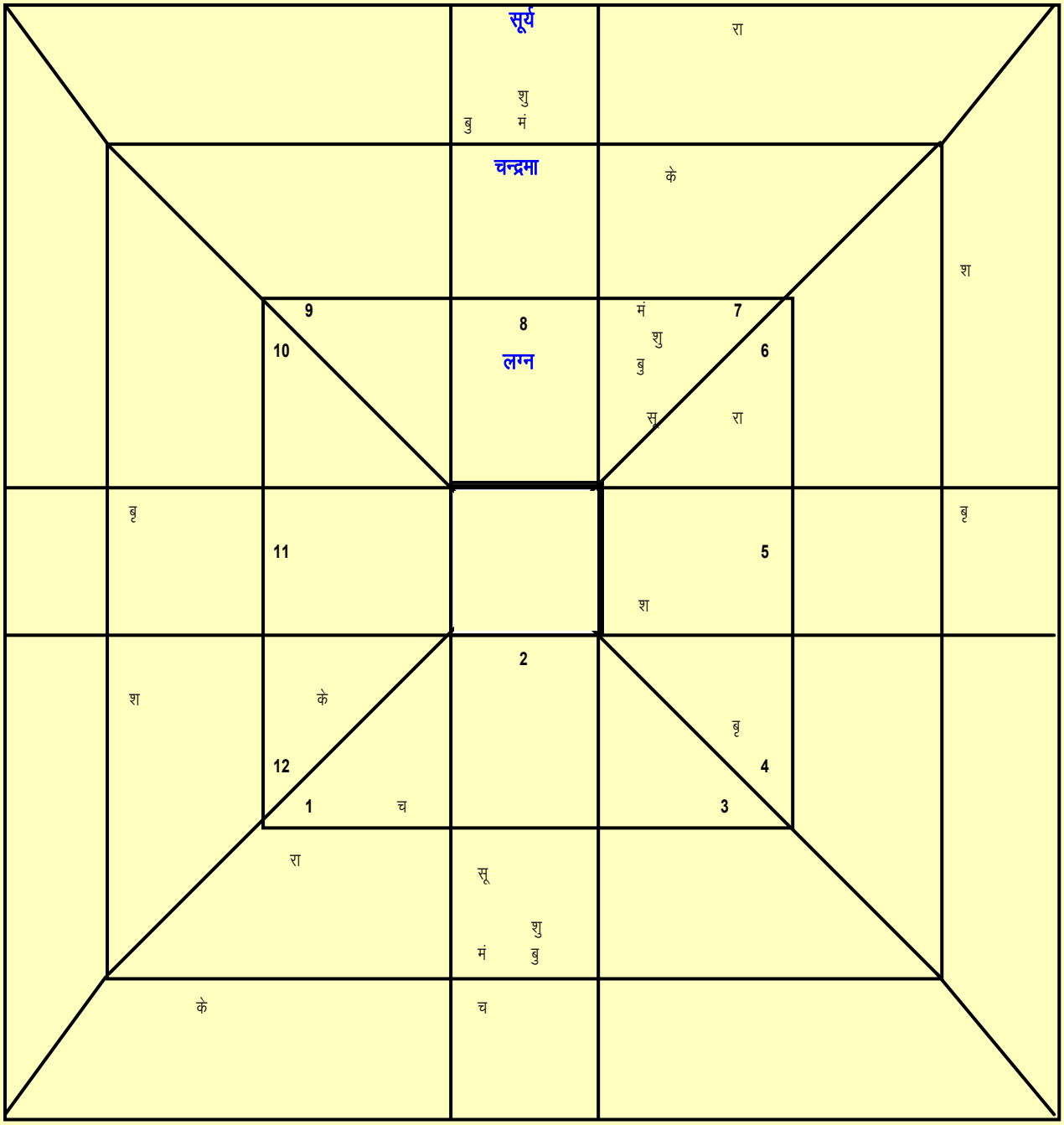

6/18/30/42/54/66/78/90/102/114 7/19/31/43/55/67/79/91/103/115 8/20/32/44/56/68/80/92/104/116

सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़गें।

यदि केवल शुभ ग्रहों (वृहस्पति, शुक्र वुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा और मांगलिक कार्य होगें।
यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सुर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

ग्रह दृष्टि (पराशरी)

ग्रह	मुख्य दृष्टि	विशेष दृष्टि
सूर्य	चन्द्रमा	------
चन्द्रमा	सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र	------
मंगल	चन्द्रमा	------
बुध	चन्द्रमा	------
गुरू	------	लग्न, केतु
शुक्र	चन्द्रमा	------
शनि	------	सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र
राहु	केतु	------
केतु	राहु	------

ग्रह दृष्टि (जैमिनी)

राशि (ग्रह)	सम्मुख दृष्टि	पृष्ठ दृष्टि
मेष (च0)	वृश्चिक	सिहं (श0), कुम्भ
वृष	तुला (सू0, मं0, बु0, शु0)	कर्क (गु0), मकर
मिथुन	कन्या (रा0)	धनु, मीन (के0)
कर्क (गु0)	कुम्भ	वृष, वृश्चिक
सिहं (श0)	मकर	मेष (च0), तुला (सू0, मं0, बु0, शु0)
कन्या (रा0)	मिथुन	धनु, मीन (के0)
तुला (सू0, मं0, बु0, शु0)	वृष	सिहं (श0), कुम्भ
वृश्चिक	मेष (च0)	कर्क (गु0), मकर
धनु	मीन (के0)	मिथुन, कन्या (रा0)
मकर	सिहं (श0)	वृष, वृश्चिक
कुम्भ	कर्क (गु0)	मेष (च0), तुला (सू0, मं0, बु0, शु0)
मीन (के0)	धनु	मिथुन, कन्या (रा0)

नोट-सम्मुख दृष्टि का प्रभाव पृष्ठ दृष्टि से ज्यादा होता है।

ग्रह दृष्टि (ताजिक)

ग्रह	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
लग्न	---									
सूर्य	2/12 (-)	---								
चन्द्रमा	6/8 (+)	7/7 (-)	---							
मंगल	2/12 (+)	1/1 (-)	7/7 (+)	---						
बुध	2/12 (-)	1/1 (-)	7/7 (-)	1/1 (-)	---					
गुरू	5/9 (-)	4/10 (-)	4/10 (-)	4/10 (-)	4/10 (+)	---				
शुक्र	2/12 (+)	1/1 (-)	7/7 (+)	1/1 (+)	1/1 (-)	4/10 (-)	---			
शनि	4/10 (-)	3/11 (-)	5/9 (+)	3/11 (-)	3/11 (+)	2/12 (+)	3/11 (-)	---		
राहु	3/11 (-)	2/12 (+)	6/8 (-)	2/12 (-)	2/12 (-)	3/11 (-)	2/12 (-)	2/12 (-)	---	
केतु	5/9 (-)	6/8 (+)	2/12 (-)	6/8 (-)	6/8 (-)	5/9 (-)	6/8 (-)	6/8 (-)	7/7 (+)	---

लिजेन्ड-

१/१ कन्जक्शन , २ /१२ सेमी सेक्सटाइल , ३/११ सेक्सटाइल , ४/१० स्क्वायर , ५/९ ट्राइन , ६/८ क्वीन्क्शं , ७/७ अपोजीशन (.) से अभिप्राय यह है कि इसमें ग्रहीय दृष्टि सीमा का समावेश है , ( ) से अभिप्राय यह है कि इसमें ग्रहीय दृष्टि सीमा का समावेश नहीं है।

नोट- ग्रह दृष्टि के लिए ताजिक सिद्धान्त के अनुसार औसत ग्रहीय दृष्टि सीमा को लिया गया है। राहु और केतु के लिए दृष्टि सीमा ६ लिया गया है, परन्तु लग्न के लिए किसी दृष्टि सीमा को नहीं लिया गया है।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

ग्रह अवस्था

ग्रह	स्वप्नादि 3	बलादि 5	लज्जितादि 9	दिप्तादि 9	दिप्तादि 10
सूर्य	सुप्त	बाल	लज़्जित	दुखित	दीन
चन्द्रमा	स्वप्न	मृत	मुदित	शांत	संत
मंगल	स्वप्न	मृत	क्षुदित	दीन	दीन
बुध	स्वप्न	युवा	लज़्जित	शांत	संत
गुरू	स्वप्न	युवा		दीप्त	दीप्त
शुक्र	जाग्रत	मृत	लज़्जित	स्वस्थ	स्वस्थ
शनि	सुप्त	युवा	क्षुदित	दुखित	
राहु	स्वप्न	बाल		दीन	मुदित
केतु	स्वप्न	बाल	लज़्जित	दीन	वक्र

सन्नडि

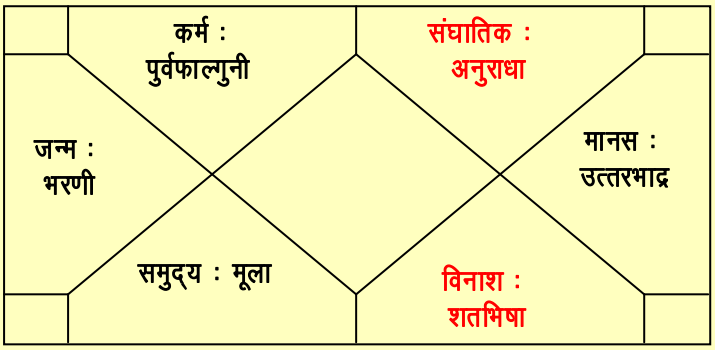

स्थुन		कंटक स्थुन-	आश्लेषा	जाति-	रेवती	देश-	
कुज स्थुन-	हस्त	खत स्थुन-	हस्त	प्रतिष्ठा-	अश्विनी	त्रि-नाड़ि	

नव-तारा चक्र

जन्म	संपत	विपत	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	निधन	मित्र	अति मित्र
भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पूर्वाफाल्गुनी	उत्तराफाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज़्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ	उत्तराषाढ़	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती	अश्विनी

आर्कचतुष्टय और नवशुभ अर्क

जन्म : भरणी	कर्म : पुर्वफाल्गुनी	आधान : पूर्वाषाढ़	नैधव : धनिष्ठा

आर्कचतुष्टय की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (२८ नक्षत्र के आधार पर)।

		दग्ध : चित्रा	क्षय : ज्येष्ठा
	शूल : उत्तराषाढ़	सन्निपात : रेवती	ध्वज : रोहिणी
उल्का : पुनर्वसु	भुकम्प : पुष्य	वज्रक : अश्लेषा	निर्घात : मघा

नवशुभ अर्क की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (२७ नक्षत्र के आधार पर)।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : ०२३:३३:३६) : शुक्र : १ व0 ११ मा0 २५ दि0

क्र0 स0	ग्रह दशा	अवधि	से ---------- तक
1	♀ शुक्र महादशा	1 y.11 m.25 d.	18:10:1978 --- 13:10:1980
2	☉ सूर्य महादशा	6 y.0 m.0 d.	13:10:1980 --- 13:10:1986
3	☽ चन्द्रमा महादशा	10 y.0 m.0 d.	13:10:1986 --- 13:10:1996
4	♂ मंगल महादशा	7 y.0 m.0 d.	13:10:1996 --- 13:10:2003
5	☊ राहु महादशा	18 y.0 m.0 d.	13:10:2003 --- 13:10:2021
6	♃ गुरू महादशा	16 y.0 m.0 d.	13:10:2021 --- 13:10:2037
7	♄ शनि महादशा	19 y.0 m.0 d.	13:10:2037 --- 13:10:2056
8	☿ बुध महादशा	17 y.0 m.0 d.	13:10:2056 --- 13:10:2073
9	☋ केतु महादशा	7 y.0 m.0 d.	13:10:2073 --- 13:10:2080

विंशोत्तरी अन्तर्दशा

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
शुक्र	
सूर्य	
चन्द्रमा	
मंगल	
राहु	
गुरू	
शनि	
बुध	18:10:1978 - 13:08:1979
केतु	13:08:1979 - 13:10:1980

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
सूर्य	13:10:1980 - 31:01:1981
चन्द्रमा	31:01:1981 - 01:08:1981
मंगल	01:08:1981 - 07:12:1981
राहु	07:12:1981 - 01:11:1982
गुरू	01:11:1982 - 20:08:1983
शनि	20:08:1983 - 01:08:1984
बुध	01:08:1984 - 08:06:1985
केतु	08:06:1985 - 13:10:1985
शुक्र	13:10:1985 - 13:10:1986

चन्द्रमा दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
चन्द्रमा	13:10:1986 - 13:08:1987
मंगल	13:08:1987 - 14:03:1988
राहु	14:03:1988 - 13:09:1989
गुरू	13:09:1989 - 13:01:1991
शनि	13:01:1991 - 13:08:1992
बुध	13:08:1992 - 13:01:1994
केतु	13:01:1994 - 13:08:1994
शुक्र	13:08:1994 - 13:04:1996
सूर्य	13:04:1996 - 13:10:1996

मंगल दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
मंगल	13:10:1996 - 11:03:1997
राहु	11:03:1997 - 30:03:1998
गुरू	30:03:1998 - 05:03:1999
शनि	05:03:1999 - 13:04:2000
बुध	13:04:2000 - 11:04:2001
केतु	11:04:2001 - 07:09:2001
शुक्र	07:09:2001 - 07:11:2002
सूर्य	07:11:2002 - 14:03:2003
चन्द्रमा	14:03:2003 - 13:10:2003

राहु दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
राहु	13:10:2003 - 26:06:2006
गुरू	26:06:2006 - 19:11:2008
शनि	19:11:2008 - 25:09:2011
बुध	25:09:2011 - 14:04:2014
केतु	14:04:2014 - 02:05:2015
शुक्र	02:05:2015 - 02:05:2018
सूर्य	02:05:2018 - 27:03:2019
चन्द्रमा	27:03:2019 - 25:09:2020
मंगल	25:09:2020 - 13:10:2021

गुरू दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
गुरू	13:10:2021 - 01:12:2023
शनि	01:12:2023 - 14:06:2026
बुध	14:06:2026 - 19:09:2028
केतु	19:09:2028 - 26:08:2029
शुक्र	26:08:2029 - 25:04:2032
सूर्य	25:04:2032 - 12:02:2033
चन्द्रमा	12:02:2033 - 14:06:2034
मंगल	14:06:2034 - 20:05:2035
राहु	20:05:2035 - 13:10:2037

शनि दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
शनि	13:10:2037 - 16:10:2040
बुध	16:10:2040 - 26:06:2043
केतु	26:06:2043 - 04:08:2044
शुक्र	04:08:2044 - 04:10:2047
सूर्य	04:10:2047 - 16:09:2048
चन्द्रमा	16:09:2048 - 17:04:2050
मंगल	17:04:2050 - 26:05:2051
राहु	26:05:2051 - 02:04:2054
गुरू	02:04:2054 - 13:10:2056

बुध दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
बुध	13:10:2056 - 11:03:2059
केतु	11:03:2059 - 07:03:2060
शुक्र	07:03:2060 - 06:01:2063
सूर्य	06:01:2063 - 13:11:2063
चन्द्रमा	13:11:2063 - 14:04:2065
मंगल	14:04:2065 - 11:04:2066
राहु	11:04:2066 - 28:10:2068
गुरू	28:10:2068 - 03:02:2071
शनि	03:02:2071 - 13:10:2073

केतु दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
केतु	13:10:2073 - 11:03:2074
शुक्र	11:03:2074 - 11:05:2075
सूर्य	11:05:2075 - 16:09:2075
चन्द्रमा	16:09:2075 - 16:04:2076
मंगल	16:04:2076 - 13:09:2076
राहु	13:09:2076 - 01:10:2077
गुरू	01:10:2077 - 07:09:2078
शनि	07:09:2078 - 16:10:2079
बुध	16:10:2079 - 13:10:2080

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

विंशोत्तरी दशा

राहु महादशा (13:10:2003 से 13:10:2021)

राहु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	13:10:2003
गुरू	09:03:2004
शनि	19:07:2004
बुध	23:12:2004
केतु	11:05:2005
शुक्र	08:07:2005
सूर्य	19:12:2005
चन्द्रमा	06:02:2006
मंगल	29:04:2006

गुरू अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
गुरू	26:06:2006
शनि	21:10:2006
बुध	08:03:2007
केतु	10:07:2007
शुक्र	30:08:2007
सूर्य	24:01:2008
चन्द्रमा	07:03:2008
मंगल	20:05:2008
राहु	10:07:2008

शनि अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शनि	19:11:2008
बुध	02:05:2009
केतु	27:09:2009
शुक्र	27:11:2009
सूर्य	19:05:2010
चन्द्रमा	10:07:2010
मंगल	05:10:2010
राहु	04:12:2010
गुरू	09:05:2011

बुध अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	25:09:2011
केतु	04:02:2012
शुक्र	29:03:2012
सूर्य	01:09:2012
चन्द्रमा	18:10:2012
मंगल	03:01:2013
राहु	27:02:2013
गुरू	16:07:2013
शनि	17:11:2013

केतु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	14:04:2014
शुक्र	06:05:2014
सूर्य	09:07:2014
चन्द्रमा	28:07:2014
मंगल	29:08:2014
राहु	20:09:2014
गुरू	17:11:2014
शनि	07:01:2015
बुध	09:03:2015

शुक्र अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शुक्र	02:05:2015
सूर्य	01:11:2015
चन्द्रमा	25:12:2015
मंगल	26:03:2016
राहु	29:05:2016
गुरू	10:11:2016
शनि	05:04:2017
बुध	25:09:2017
केतु	27:02:2018

सूर्य अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	02:05:2018
चन्द्रमा	18:05:2018
मंगल	15:06:2018
राहु	04:07:2018
गुरू	22:08:2018
शनि	05:10:2018
बुध	26:11:2018
केतु	12:01:2019
शुक्र	31:01:2019

चन्द्रमा अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
चन्द्रमा	27:03:2019
मंगल	11:05:2019
राहु	12:06:2019
गुरू	02:09:2019
शनि	14:11:2019
बुध	09:02:2020
केतु	27:04:2020
शुक्र	29:05:2020
सूर्य	28:08:2020

मंगल अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
मंगल	25:09:2020
राहु	17:10:2020
गुरू	14:12:2020
शनि	03:02:2021
बुध	05:04:2021
केतु	29:05:2021
शुक्र	20:06:2021
सूर्य	23:08:2021
चन्द्रमा	11:09:2021

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

विंशोत्तरी दशा

बुध अन्तर्दशा (25:09:2011 से 14:04:2014)

बुध प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
बुध	25:09:2011
केतु	14:10:2011
शुक्र	21:10:2011
सूर्य	12:11:2011
चन्द्रमा	19:11:2011
मंगल	30:11:2011
राहु	08:12:2011
गुरू	27:12:2011
शनि	14:01:2012

केतु प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
केतु	04:02:2012
शुक्र	07:02:2012
सूर्य	16:02:2012
चन्द्रमा	19:02:2012
मंगल	23:02:2012
राहु	27:02:2012
गुरू	06:03:2012
शनि	13:03:2012
बुध	22:03:2012

शुक्र प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
शुक्र	29:03:2012
सूर्य	24:04:2012
चन्द्रमा	02:05:2012
मंगल	15:05:2012
राहु	24:05:2012
गुरू	16:06:2012
शनि	07:07:2012
बुध	01:08:2012
केतु	23:08:2012

सूर्य प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
सूर्य	01:09:2012
चन्द्रमा	03:09:2012
मंगल	07:09:2012
राहु	10:09:2012
गुरू	17:09:2012
शनि	23:09:2012
बुध	01:10:2012
केतु	07:10:2012
शुक्र	10:10:2012

चन्द्रमा प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
चन्द्रमा	18:10:2012
मंगल	24:10:2012
राहु	29:10:2012
गुरू	09:11:2012
शनि	20:11:2012
बुध	02:12:2012
केतु	13:12:2012
शुक्र	18:12:2012
सूर्य	31:12:2012

मंगल प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
मंगल	03:01:2013
राहु	07:01:2013
गुरू	15:01:2013
शनि	22:01:2013
बुध	31:01:2013
केतु	07:02:2013
शुक्र	10:02:2013
सूर्य	19:02:2013
चन्द्रमा	22:02:2013

राहु प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
राहु	27:02:2013
गुरू	20:03:2013
शनि	07:04:2013
बुध	29:04:2013
केतु	19:05:2013
शुक्र	27:05:2013
सूर्य	20:06:2013
चन्द्रमा	27:06:2013
मंगल	08:07:2013

गुरू प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
गुरू	16:07:2013
शनि	02:08:2013
बुध	21:08:2013
केतु	08:09:2013
शुक्र	15:09:2013
सूर्य	06:10:2013
चन्द्रमा	12:10:2013
मंगल	23:10:2013
राहु	30:10:2013

शनि प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
शनि	17:11:2013
बुध	11:12:2013
केतु	01:01:2014
शुक्र	09:01:2014
सूर्य	03:02:2014
चन्द्रमा	10:02:2014
मंगल	22:02:2014
राहु	03:03:2014
गुरू	25:03:2014

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

विंशोत्तरी दशा

राहु प्रत्यन्तर्दशा (27:02:2013 से 16:07:2013)

राहु सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
राहु	27:02:2013 : 03:27:44AM
गुरू	02:03:2013 : 06:51:11AM
शनि	05:03:2013 : 01:52:01AM
बुध	08:03:2013 : 09:26:46AM
केतु	11:03:2013 : 08:38:54AM
शुक्र	12:03:2013 : 01:58:01PM
सूर्य	16:03:2013 : 01:44:04AM
चन्द्रमा	17:03:2013 : 02:51:53AM
मंगल	18:03:2013 : 08:44:55PM

गुरू सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
गुरू	20:03:2013 : 02:04:02AM
शनि	22:03:2013 : 01:38:07PM
बुध	25:03:2013 : 00:22:20PM
केतु	28:03:2013 : 03:39:47AM
शुक्र	29:03:2013 : 05:43:27AM
सूर्य	01:04:2013 : 08:11:03AM
चन्द्रमा	02:04:2013 : 06:31:20AM
मंगल	03:04:2013 : 07:45:08PM
राहु	04:04:2013 : 09:48:47PM

शनि सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
शनि	07:04:2013 : 04:49:38PM
बुध	11:04:2013 : 04:49:39AM
केतु	14:04:2013 : 07:59:08AM
शुक्र	15:04:2013 : 02:55:58PM
सूर्य	19:04:2013 : 07:21:15AM
चन्द्रमा	20:04:2013 : 09:52:50AM
मंगल	22:04:2013 : 06:05:28AM
राहु	23:04:2013 : 01:02:19PM
गुरू	26:04:2013 : 08:37:04PM

बुध सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
बुध	29:04:2013 : 07:21:17PM
केतु	02:05:2013 : 02:36:05PM
शुक्र	03:05:2013 : 06:17:28PM
सूर्य	07:05:2013 : 01:24:18AM
चन्द्रमा	08:05:2013 : 01:08:21AM
मंगल	09:05:2013 : 04:41:45PM
राहु	10:05:2013 : 08:23:09PM
गुरू	13:05:2013 : 07:35:17PM
शनि	16:05:2013 : 10:52:45AM

केतु सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
केतु	19:05:2013 : 02:02:14PM
शुक्र	20:05:2013 : 01:26:20AM
सूर्य	21:05:2013 : 10:00:54AM
चन्द्रमा	21:05:2013 : 07:47:17PM
मंगल	22:05:2013 : 00:04:34PM
राहु	22:05:2013 : 11:28:40PM
गुरू	24:05:2013 : 04:47:47AM
शनि	25:05:2013 : 06:51:27AM
बुध	26:05:2013 : 01:48:18PM

शुक्र सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
शुक्र	27:05:2013 : 05:29:41PM
सूर्य	31:05:2013 : 02:34:11PM
चन्द्रमा	01:06:2013 : 06:29:32PM
मंगल	03:06:2013 : 05:01:47PM
राहु	05:06:2013 : 01:36:21AM
गुरू	08:06:2013 : 01:22:24PM
शनि	11:06:2013 : 03:50:00PM
बुध	15:06:2013 : 08:15:17AM
केतु	18:06:2013 : 03:22:06PM

सूर्य सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
सूर्य	19:06:2013 : 11:56:41PM
चन्द्रमा	20:06:2013 : 08:19:17AM
मंगल	20:06:2013 : 10:16:58PM
राहु	21:06:2013 : 08:03:20AM
गुरू	22:06:2013 : 09:11:09AM
शनि	23:06:2013 : 07:31:26AM
बुध	24:06:2013 : 10:03:01AM
केतु	25:06:2013 : 09:47:04AM
शुक्र	25:06:2013 : 07:33:26PM

चन्द्रमा सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
चन्द्रमा	26:06:2013 : 11:28:47PM
मंगल	27:06:2013 : 10:44:54PM
राहु	28:06:2013 : 03:02:12PM
गुरू	30:06:2013 : 08:55:13AM
शनि	01:07:2013 : 10:09:01PM
बुध	03:07:2013 : 06:21:39PM
केतु	05:07:2013 : 09:55:04AM
शुक्र	06:07:2013 : 02:12:21AM
सूर्य	08:07:2013 : 00:44:36AM

मंगल सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
मंगल	08:07:2013 : 02:42:17PM
राहु	09:07:2013 : 02:06:23AM
गुरू	10:07:2013 : 07:25:30AM
शनि	11:07:2013 : 09:29:10AM
बुध	12:07:2013 : 04:26:00PM
केतु	13:07:2013 : 08:07:24PM
शुक्र	14:07:2013 : 07:31:30AM
सूर्य	15:07:2013 : 04:06:04PM
चन्द्रमा	16:07:2013 : 01:52:27AM

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

गोचर की तारीख- 11:07:2013 गोचर का समय- 15:19:22 गोचर का स्थान- New Delhi (INDIA)

ग्रह स्थिति

Sample						Transit					
ग्रह	राशि	डिग्री	नक्षत्र			ग्रह	राशि	डिग्री	नक्षत्र		
लग्न	वृश्चिक	29:32:28	ज्येष्ठा (४)	–	–	लग्न	वृश्चिक	01:24:12	विशाखा (४)	–	–
सूर्य	तुला	00:55:32	चित्रा (३)	नीच0	शु0ग्र0	सूर्य	मिथुन	25:12:46	पुनर्वसु (२)		शु0ग्र0
चन्द्रमा	मेष	25:20:31	भरणी (४)	मे0ग्र0	–	चन्द्रमा	कर्क	29:38:03	आश्लेषा (४)		शु0ग्र0
मंगल	तुला	25:54:52	विशाखा (२)	तु0ग्र0	शु0ग्र0	मंगल	मिथुन	04:29:36	मृगशिर (४)		शु0ग्र0
बुध	तुला	12:44:41	स्वाती (२)	मे0ग्र0	शु0ग्र0	बुध व0	मिथुन	22:38:41	पुनर्वसु (१)	व0	ज्व0
गुरू	कर्क	13:11:00	पुष्य (३)	तु0ग्र0	–	गुरू	मिथुन	09:26:02	आर्द्रा (१)		शु0ग्र0
शुक्र व0	तुला	29:14:43	विशाखा (३)	स्व	शु0ग्र0	शुक्र	कर्क	22:32:44	आश्लेषा (२)		शु0ग्र0
शनि	सिहं	16:32:48	पूर्वाफल्गुनी (१)	शु0ग्र0	–	शनि	तुला	10:46:37	स्वाती (२)		दु0ग्रह
राहु व0	कन्या	01:37:30	उत्तराफल्गुनी (२)	तु0ग्र0	–	राहु व0	तुला	19:24:42	स्वाती (४)	व0	दु0ग्रह
केतु व0	मीन	01:37:30	पूर्वाभाद्रपद (४)	तु0ग्र0	–	केतु व0	मेष	19:24:42	भरणी (२)	व0	–
हर्षल	तुला	21:47:39	विशाखा (१)	–	शु0ग्र0	हर्षल	मीन	18:27:22	रेवती (१)		–
नेपच्यून	वृश्चिक	22:40:43	ज्येष्ठा (२)	–	–	नेपच्यून व0	कुम्भ	11:01:30	शतभिषा (२)	व0	–
प्लूटो	कन्या	23:21:11	चित्रा (१)	–	ज्व0	प्लूटो व0	धनु	16:00:22	पूर्वाषाढ (१)	व0	–

Sample

लग्न कुण्डली

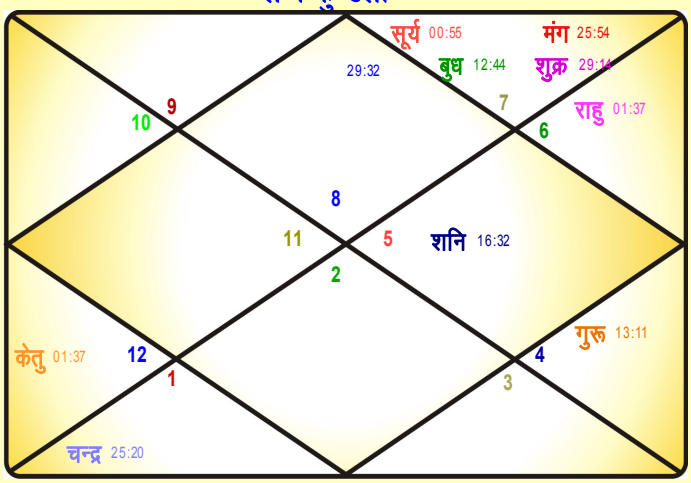

नवांश कुण्डली

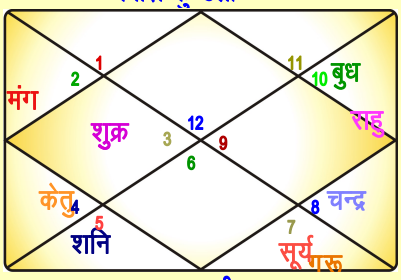

चन्द्र कुण्डली

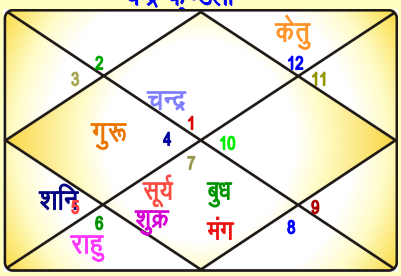

नवांश कुण्डली

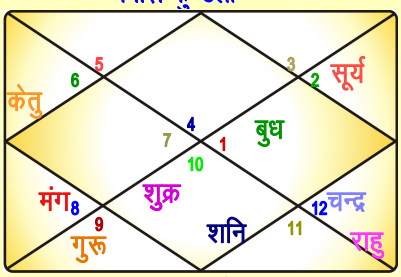

चन्द्र कुण्डली

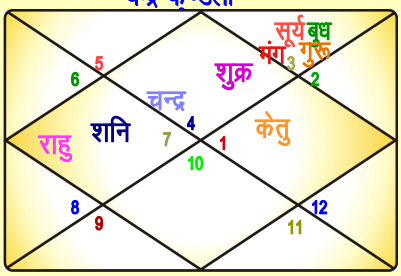

Transit

लग्न कण्डली

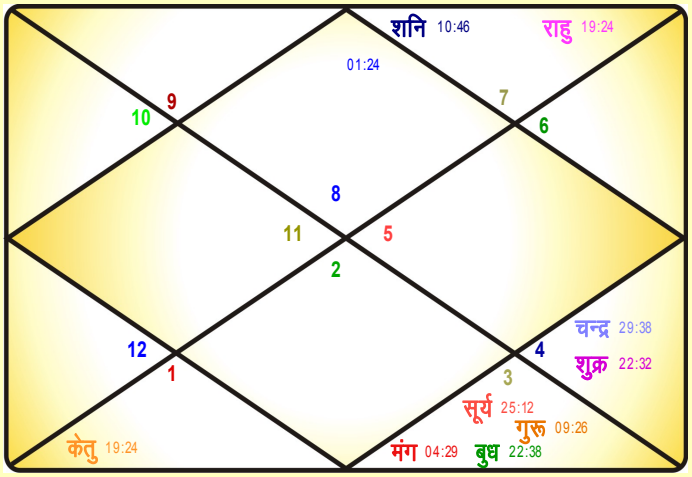

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

गोचर शनि

(शनि साढ़ेसाती)

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।
सार्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चन्द्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।

शनि साढ़ेसाती का पहला चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैया	मीन	02:06:1995	10:08:1995	0 y.2 m.8 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	मीन	16:02:1996	17:04:1998	2 y.1 m.29 d.	
द्वितिय ढ़ैया	मेष	17:04:1998	07:06:2000	2 y.1 m.21 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)					
तृतिय ढ़ैया	वृष	07:06:2000	23:07:2002	2 y.1 m.15 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	वृष	08:01:2003	07:04:2003	0 y.2 m.28 d.	
कंटक शनि	कर्क	06:09:2004	13:01:2005	0 y.4 m.7 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	कर्क	26:05:2005	01:11:2006	1 y.5 m.7 d.	
अष्टम शनि	वृश्चिक	02:11:2014	26:01:2017	2 y.2 m.24 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	वृश्चिक	21:06:2017	26:10:2017	0 y.4 m.5 d.	

शनि साढ़ेसाती का दूसरा चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैया	मीन	29:03:2025	03:06:2027	2 y.2 m.5 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	मीन	20:10:2027	23:02:2028	0 y.4 m.4 d.	
द्वितिय ढ़ैया	मेष	03:06:2027	20:10:2027	0 y.4 m.17 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	मेष	23:02:2028	08:08:2029	1 y.5 m.14 d.	
तृतिय ढ़ैया	वृष	08:08:2029	05:10:2029	0 y.1 m.27 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	वृष	17:04:2030	31:05:2032	2 y.1 m.14 d.	
कंटक शनि	कर्क	13:07:2034	27:08:2036	2 y.1 m.15 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)					
अष्टम शनि	वृश्चिक	12:12:2043	23:06:2044	0 y.6 m.11 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	वृश्चिक	30:08:2044	08:12:2046	2 y.3 m.8 d.	

शनि साढ़ेसाती का तीसरा चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व-म-दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैया	मीन	14:05:2054	02:09:2054	0 y.3 m.19 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	मीन	05:02:2055	07:04:2057	2 y.2 m.0 d.	
द्वितिय ढ़ैया	मेष	07:04:2057	28:05:2059	2 y.1 m.20 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)					
तृतिय ढ़ैया	वृष	28:05:2059	11:07:2061	2 y.1 m.13 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	वृष	13:02:2062	07:03:2062	0 y.0 m.22 d.	
कंटक शनि	कर्क	24:08:2063	06:02:2064	0 y.5 m.14 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	कर्क	09:05:2064	13:10:2065	1 y.5 m.4 d.	
अष्टम शनि	वृश्चिक	05:02:2073	31:03:2073	0 y.1 m.23 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	वृश्चिक	23:10:2073	16:01:2076	2 y.2 m.24 d.	

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

जातक से संबंधित सामान्य भविष्यफल

सामान्य जानकारी :

आपकी लग्न राशि वृश्चिक है, जिसका स्वामी मंगल है। यह एक जलीय, स्थिर या भयानक व मूक राशि है। विशेषत: यह स्त्री प्रधान, फलदायक, उग्र और हिंसात्मक राशि है। आप उग्र, आत्मविश्वासी और मनोवेगपूर्ण हो सकते हैं। आप बहुत बुद्धिमान और चतुर होगें। आप कुछ हठी, संकल्पित स्वभाव के, आवेगी, साहसी एवं प्रतिस्पर्धा करने वाले होगें, परन्तु इसके आने पर आप घबरा जाते हैं। आप उत्साही होगें, परन्तु आरक्षित रहना पसंद करेगें एवं वार्तालाप के समय चिंता मग्न रहेगें। आप बहुत सोच समझकर बात करेगें, और आपके शब्दों का सकारात्मक अर्थ होगा। आप परिश्रमी होगें, और किसी काम को अधूरा नहीं छोडेगें। आपके विचार पहले से अचल व अपरिवर्तनीय होगें।

आप बातचीत में दक्ष होगें। उदारता और सौम्यता आपके गुण होगें। परोपकार के लिये आप किसी भी चीज का त्याग कर सकते हैं। आप पुरानी परम्पराओं और परामपरागत मूल्यों को महत्व देगें। आपको राजकीय सम्मान मिलेगा। संगीत और कला से आपको प्रेम होगा। आप पर कुछ भी थोपा नहीं जा सकताहै, पर आप दूसरों पर आप अपनी बात थोप सकते हैं। आप अपनी कूटनीतिक दक्षता के द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगें। आपकी यह विशेषता समय-समय पर सहायक होगी और आपको कठिन परिस्थितियों से बाहर निकालेगी । रहस्यपूर्ण और भावयोगी विषयों में आपकी गहरी रूचि होगी। आपकीप्रकृति रहस्यमय होगी, और आप अपनी कार्य योजना को किसी के सामने प्रगट नहीं करेगें। आप अपने विचारों पर अडिग रहेगें। आप किसी तरह की खोज संबंधी कार्यों में लगे हो सकते हैं या किसी ऐसे क्षेत्र की तरफ रूख कर सकते हैं जहॉ निष्कर्ष निकालने के लिए तीव्र दिमाग की जरूरत होती है।

शारीरिक संरचना :

आप मध्यम कद के स्थूल शरीर तथा बड़े चेहरे वाले हो सकते हैं। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा। आपकी रंगत गोरी होगी। आपके नेत्र पीले, बडे और गहरे हो सकते हैं। आपके कंधे चौडे और कमर पतली हो सकती है। आपकी टांगे टेढ़ी या पैरों में कोई दोष हो सकता है। आप के बाल घुँघराले हो सकते हैं। आपके शरीर का ऊपरी भाग निचले भाग से बडा हो सकता है।

मानसिक स्थिति :

आपकी कुण्डली में चंद्रमा मेष राशि में स्थित है, जो मंगल द्वारा संचालित होता है। यह चलायमान और आग्नेय राशि है। आप संवेगी, स्वतंत्र, आत्मनिर्भर तथा आशावादी हो सकते हैं। आप उग्र तथा आतंकी स्वभाव के हो सकते हैं। आप बहुत अधिक आज्ञाकारी नही होगें, तथा परंपरा और रीति-रिवाजों को अधिक महत्त्व नही देगें। आप परिवर्तनशील एवं चंचल हो सकते हैं, तथा आप धैर्यवान नही होगें। आपका स्वभाव चिड़चिड़ा होगा, और जल्द गुस्सा हो जायेगें। आप दूसरों के द्वारा दी गयी सलाह नहीं मानेगें, और सदा अपने विचारों को मान्यता देगें।

आप बहुत अधिक प्रसिद्धि पायेगें, और आपके बहुत प्रशंसक और मित्र होगें। आपमें दूसरों में जागरूकता लाने की क्षमता होगी, जिससे आप बहुत लोगों को अपने नियंत्रण में रख सकते हैं। अपने विशिष्ट गुणों के कारण आप जल्दी ही अपनी पहचान बनायेगें, तथा आप किसी विभाग, कार्यालय या उपक्रम के अध्यक्ष बन सकते हैं। यदि अपने कार्यस्थल पर आपको कोई विशेषाधिकार प्राप्त नहीं है, तो

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

आप अपने लिए जल्द ही नए रास्तों की तलाश कर लेगें। छोटी आयु में ही आप निश्चित रूप से बढ़ियास्थिति प्राप्त कर लेंगे। आपको किसी पार्टी की सदस्यता पसंद नहीं होगी। आपके व्यवसाय में कुछगोपनीयता हो सकती है। रहस्यपूर्ण विषय आपको आकर्षित करेगें, तथा इनसे संबधित विषयों के अध्ययन में दिलचस्पी होगी।

आप में अद्‌भुत जीवन शक्ति होगी। लेकिन आप निरंन्तर कुछ छोटी दुर्घटनाओं का सामना कर सकते हैं ।बचपन में किसी दुर्घटना के फलस्वरूप आपके सिर या चेहरे पर निशान हो सकता है। आपको कुछ अधिक गर्मी महसूस हो सकती है, या बुखार से पीड़ित हो सकते हैं। आप महिला समुदाय के प्रति आकर्षित होगें, और छोटी उम्र में ही आपके द्वारा पसंद किए गये व्यक्ति से आपका विवाह हो सकता है। आपको शिशुओं से लगाव होगा और आपकी पहली संतान आपकी ऑखों का तारा होगा । अगर आपकीकुण्डली में कोई प्रभावशाली ग्रह नहीं, है तो माता-पिता में से किसी एक के साथ आपके गहरे मतभेद हो सकते हैं, और किशोरावस्था में ही परिस्थितिवश उनसे अलग हो सकते हैं।

गुण :

आप निडर, ऊर्जावान, शक्तिशाली होगें। आपकी बुद्धि तीक्ष्ण होगी। आप वफादार और कल्पनाशील होगें। रोमांच, नृत्य और जीवन के विलासों से आपको प्रेम होगा। आपको समाज में एक ऊँचा स्थान मिलेगा।

अवगुण :

आप निष्ठुर और आलोचक हो सकते हैं। आपके व्यवहार में लचीलापन नहीं हो सकता है। आपमें प्रतिशोध की भावना हो सकती है।

विशेष लक्षण :

१)आप बहुत शांत होगें, लेकिन किसी विरोधी को भूलना या क्षमा करना आपके लिये कठिन होगा। आपअपमान या चोट को नहीं भूलेगें।
२) आपको दूसरों को आदेश देना और उन पर शासन करना पसन्द होगा, लेकिन किसी के अधीन रहना आपको पसन्द नहीं होगा।
३) शुरूआती हिचकिचाहट के बाद आप लोगों के एक घनिष्ठ मित्र बन जायेगें।

रोजगार :

आप एक डाक्टर, शल्य चिकित्सक, दवा विक्रेता, शोधकर्त्ता, वैज्ञानिक, राजनायक, वकील या उद्योगपति बन सकते हैं। आप सुरक्षा बलों के लिये जासूसी का काम भी कर सकते हैं। एक कलाकार के रूप में या महिला समुदाय से संबंधित काम करके भी आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

शुभ एवं अशुभ ग्रह :

१) लग्न का स्वामी होने के कारण मंगल शुभ ग्रह है। सूर्य और बृहस्पति भी लाभकारी ग्रह होगें।
२) नवमेश चन्द्रमा अति शुभ ग्रह होगा।
३) शनि उदासीन ग्रह होगा।
४) अष्टमेश और एकादशेश बुध तथा सप्तमेश और द्वितीयेश शुक्र अशुभ ग्रह हैं।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

५) द्वितीयेश बृहस्पति और सप्तमेश शुक्र मारक ग्रह हो सकते हैं।

वृश्चिक लग्न वाले कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्ति :

फील्ड मार्शल अयूब खान – पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति, अल्फ्रेड रसल, थॉमस अल्वा एडिसन – वैज्ञानिक, अरूण शौरी – मंत्री, लाल कृष्ण अडवानी – मंत्री, इमरान खान – क्रिकेटर, जॉन ब्रॉग – टेनिसखिलाडी, धर्मेन्द्र – अभिनेता, नामदेव – संत, बेनजीर भुट्टो – पाकिस्तान की पूर्व प्रधानमंत्री, मार्गेट थेचर – इंग्लैंड की पूर्व प्रधानमंत्री

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

कुण्डली में लागू हो रहे योग (ग्रह-युति)

कुण्डली में हो लागू हो रहे महत्वपूर्ण योग-

आपकी कुण्डली में, लग्नेश और द्वादशेश केन्द्रीय भाव, अर्थात लग्न, चौथे, सातवें और दसवें भाव में ग्रह स्थित हैं, जबकि एक या अधिक मित्र ग्रहों की दृष्टि इन पर है। समग्ररूप से यह एक बहुत शुभ युतिपर्वत योग (विद्यानाथ की जातक परिजात के अनुसार) का निर्माण करती है। इस शुभ योग की उपस्थिति के कारण आप बहुत भाग्यशाली होंगे, आपको प्राचीन धार्मिक ग्रंथों और पवित्र शास्त्रों का ज्ञानऔर वाग्मिता का उपहार प्राप्त होगा, आपका स्वभाव परोपकारी होगा। इसके अलावा, आप गौरवशाली और उत्साही होंगे और शहर / कस्बे /गाँव / समाज में बहुत आदरणीय व्यक्तिहोंगे।

आपकी कुण्डली में, चतुर्थेश नीच या शत्रु राशि में स्थित है या एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ में स्थित है या एक बुरे षष्ठीआंश में स्थित है। यह एक बहुत प्रतिकूल युति है, जिसे बन्धुभीसत्यकता योगकहते हैं। यदि कुछ बली संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में नहीं हैं, तो इस युति की उपस्थितिके कारण, आपके अपने संबंधी और मित्र जीवन में कभी आपको त्याग सकते हैं - यद्यपि आपकी किसी छोटी सी गलती या बिना किसी वास्तविक दोष के कारण।

आपकी कुण्डली में, बृहस्पति जलीय राशि (कर्क या वृश्चिक या मीन) में स्थित है और बृहस्पति लग्न के साथ है या उसकी दृष्टि इस पर है। इस युति को देह स्थूल योग कहते हैं। आपकी कुण्डली में इस युति के होने के कारण, यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में नहीं हैं, तो आपका स्वास्थ्य उत्तम और शारीरिक संरचना मजबूत होगी।

आपकी कुण्डली में, पंचमेश और षष्ठेश परस्पर एक दूसरे से केन्द्रीय भाव में स्थित हैं। इसके अलावा, इनमें से कोई भी ग्रह अस्त या ग्रसित नहीं है और इन दोनों में से कम से कम एक तुंगस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में होने के कारण बली है। समग्ररूप से यह एक बहुत अनुकूल युति है, जिसे शंख योग कहते हैं। आपकी कुण्डली में इस युति के होने के कारण, आप एक विद्वान होंगे, आपकी प्रकृति सदाचारी और स्वभाव परोपकारी होगा। आप बहुत धनी होंगे, आपकी अपनी भूमि तथा सम्पत्ति होगी और आपको समर्पित जीवनसाथी और योग्य संतान का सुख प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में, लग्नेश की नवांश राशि का स्वामी केन्द्रीय भाव में द्वितीयेश के साथ में है। यह बली है - जैसाकि यह तुंगस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में है और अस्त या ग्रसित नहीं है। समग्ररूप से, यह एक बहुत अनुकूल युति है, जिसे स्ववीर्य धन योग कहते हैं। आपकी कुण्डली में इस योग के गुणों कारण, आप असाधारण क्षमताओं और मजबूत कामना शक्तिके स्वामी होंगे। आप अपने भाग्य के निर्माता स्वयं होंगे। आप आराम और शान के साथ अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

आपकी कुण्डली में, द्वितीयेश एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है और लग्नेश से केन्द्रीय या त्रिक भाव में है। यह बली है -जैसाकि यह तुंगस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में है और अस्त या ग्रसित नहीं है। समग्ररूप से, यह एक बहुत अनुकूल युति है, जिसे स्ववीर्य धन योग कहते हैं। आपकी कुण्डली में इस योग के गुणों कारण, आप असाधारण क्षमताओं और मजबूत कामना शक्तिके स्वामी होंगे। आप अपने भाग्य के निर्माता स्वयं होंगे। आप आराम और शान के साथ अपना जीवन व्यतीत

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

करेंगे।

आपकी कुण्डली में, पंचमेश एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है और इसकी नवांश राशि का स्वामी भी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। कोई भी ग्रह अस्त या ग्रसित नहीं है। यह एक बहुत अनुकूल युति है, जिसे तीव्र बुद्धि योग कहते हैं। आपकी कुण्डली में इस योग के गुणों कारण, आपकी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण और सोचनेकी क्षमता तेज होगी। आप किसी भी विषय की बहुत गहराई में जाने में सक्षम होंगे और चीजों कोबहुत शीघ्र आत्मसात करेंगे।

कुण्डली में लागू हो रहे धन योग -

आपकी कुण्डली में लग्नेश और बृहस्पति एक साथ हैं, जो एक अनुकूल स्थिति में है, जिससे एक शुभ धन योग बनता है। आप धन के मामलों में भाग्यशाली होंगे, आय बहुत उत्तम होगी और अवश्य बहुत धनी होंगे।

जैसाकि आपकी कुण्डली में ग्यारहवाँ भाव पृथ्वी तत्व की राशि के साथ है, आप अपने जन्मस्थान या निवास स्थान से दक्षिण की दिशा में स्थित जगहों पर / से उत्तम लाभ कमा सकते हैं।

कुण्डली में लागू हो रहे नभष योग-

आपकी कुण्डली में मौजूद इस नभस योग को केदार योग कहते हैं। यद्यपि यह एक बहुत शुभ युति नहीं है, फिर भी आप कुछ मामलों में भाग्यशाली हो सकते हैं। यद्यपि आप सत्यनिष्ठ होंगे और सदा अपने काम से मतलब रखेंगे, फिर भी समझ के अभाव के कारण आपका दिमाग अस्थिर रहेगा। यद्यपि आप खुले विचारों वाले एक साधारण व्यक्तिहो सकते है, फिर भी आप कुछ बातूनी और हठी हो सकते हैं। आपके पेशे का संबंध कृषि, कृषि उपज या उसके कार्यान्वयन आदि से हो सकता है। हालाँकि आपकी आय उत्तम होगी और हमेशा दूसरों के लिये मददगार होंगे।

कुण्डली में लागू हो रहे अरिष्ट योग-

आपकी कुण्डली में, मंगल का योग (या दृष्टि) चन्द्रमा पर है, जबकि शनि शुक्र के साथ (या दृष्टि) में स्थित है और कोई अन्य ग्रह इन दोनों ग्रहों में से किसी के साथ सम्बद्ध (या दृष्ट) नहीं है। लेकिन वे एक दूसरे के नवांश में स्थित हैं। यह एक प्रतिकूल अरिष्ट योग युति है। परिस्थितियों के कारण, आपकोजीवन में कुछ कष्ट हो सकते हैं, आपके घर में शान्ति और संतोष का अभाव हो सकता है और आपको अपने जन्मस्थान पर उत्तम अवसर प्राप्त नहीं हो सकते हैं। आपको अपने व्यवसाय में कठिन संघर्ष करना पड़ सकता है और आपका पद और पारिश्रमिक आपकी योग्यता से असामान्य रूप से कम होसकता है। अपने व्यवसाय के संबंध में आपको कई बार जगह बदलनी पड़ सकती है। आपको जीवन के सुखों और आराम में कुछ कमी का सामना करना पड़ सकता है। यदि कुछ बली संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में नहीं हैं, तो आपकी शादी नहीं हो सकती है या आपका वैवाहिक जीवन सुखी और शान्तिपूर्ण नहीं हो सकता है।

कुण्डली में लागू हो रहे अनिष्ट योग-

आपकी कुण्डली में, एक (या अधिक) अशुभ ग्रह पांचवें भाव में स्थित है (या हैं), जबकि कोई शुभ ग्रह इसमें नहीं है। अशुभ ग्रह न तो तुंगस्थ है और न ही अपने भाव (या नक्षत्र) में है। यह एक प्रतिकूल अनिष्ट योग युति है। यदि संशोधनकारी युतियाँ आपकी कुण्डली में नहीं हैं, तो आप अपनी

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

संतान के कारण अप्रसन्न हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में, केतु पांचवें भाव में स्थित है, जो न तो तुंगस्थ है और न ही अपने भाव (या नक्षत्र) में है। कोई शुभ ग्रह स्वयं या उसकी दृष्टि इस भाव में नहीं है। यह एक प्रतिकूल अनिष्ट योग युति है। यदि कुछ बली संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में नहीं हैं, तो आपकी संतान का जन्म बहुत कष्टकारी हो सकता है। साथ ही वे बहुत योग्य और कर्तव्यपरायण नहीं हो सकते हैं।

अपवाद –

जैसाकि आपकी कुण्डली में, बृहस्पति तुंगस्थ (या अपने नक्षत्र में) है, एक गुंजाइश आपकी कुण्डली मेंमौजूद है। अत: अनिष्ट योग के बावजूद स्थिति में बहुत सुधार होगा और आपको अधिक परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ सकता है।

जैसा कि आपकी कुण्डली में, पंचमेश तुंगस्थ (या अपने नक्षत्र में) है, एक गुंजाइश आपकी कुण्डली मेंमौजूद है। अत: अनिष्ट योग के बावजूद स्थिति में बहुत सुधार होगा और आपको अधिक परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ सकता है।

कुण्डली में लागू हो रहे चन्द्र योग-

आपकी कुण्डली में बहुत शक्तिशाली गज केसरी योग की युति है। आपका जन्म एक समृद्ध परिवार में हुआ है,आपकी परवरिश बहुत उत्तम होगी। आपको अपने वरिष्ठों और अधिकारियों से सर्मथन और लाभ प्राप्त होंगे, आप एक स्थायी पद प्राप्त करेंगे और आपके भाग्य में धीरे-धीरे बढ़ोत्तरी होगी।

आपकी कुण्डली में बहुत शक्तिशाली अमला योग की युति है। आपका जन्म एक समृद्ध परिवार में हुआ है, आपकी परवरिश बहुत उत्तम होगी। आपको अपने वरिष्ठों और अधिकारियों से सर्मथन और लाभ प्राप्त होंगे, आप एक आदरणीय पद प्राप्त करेंगे और आपके भाग्य में हमेशा बढ़ोत्तरी होती रहेगी।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

गोचर शनि (शनि साढ़ेसाती) का फल और उपाय

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।
सार्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चन्द्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

(आमतौर पर यह माना जाता है कि शनि की साढ़ेसाती के दौरान जातक मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट एवं आर्थिक संकट से गुजरता है। साढ़ेसाती से लोग चिंतित हो जाते है एवं उनके मन में एक अनजाना सा डर बना रहता है। जातक में असंतोष, निराशा, आलस्य, तनाव, रोगों से हानि, चोरी या आगजनी से हानि, घर में विवाद या किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु आदि जैसे फल प्राप्त होने का डर बना रहता है। लेकिन हकीकत में साढ़ेसाती के किसी चरण का पूरा समय - साढ़े-सात साल - ऐसा नहीं होता है। काफी शुभ फल जैसे विवाह, संतानोत्पत्ति, नौकरी या व्यवसाय में उन्नति, विदेश यात्रा, भूमि, भवन या वाहन का क्रय, कर्ज से मुक्ति, ऊँचे तबके के लोगों से संपर्क और उनसे लाभ, धार्मिक स्थलों की यात्रा या धार्मिक कार्यों का आयोजन, संतानों से सुख एवं खुशी की प्राप्ति आदि भी प्राप्त होते हैं।)

शनि साढ़ेसाती के दूसरे चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैया (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि -मीन

Start -29:03:2025

End -03:06:2027

Duration -2 y.2 m.5 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -20:10:2027

End -23:02:2028

Duration -0 y.4 m.4 d.

शनि साढ़े साती के पहले चरण में आपके धन, रोग एवं भाग्य भाव पर शनि की दृष्टि होगी। इस दौरान आपको मिला-जुला फल प्राप्त होगा, जिसमें शुभ फल अधिक एवं अशुभ फल कम होंगे। आपको अपनेरोजगार या व्यवसाय से आय में कमी होगी एवं बेकार या फालतू के खर्चों में वृद्धि होगी। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं तो आर्थिक कमी के कारण व्यापार में रूकावट के साथ-साथ हानि भी हो सकती है। आप काफी चिंतित रह सकते हैं और बुरी आदतों या व्यसनों के प्रति अग्रसित हो सकते हैं। आपको इस समय हर तरह के व्यसनों से दूर रहना चाहिए, अन्यथा इनकी तरफ एक बार कदम आगे बढ़ानेके बाद आप इनके शिकार हो सकते हैं और आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, खासकर आपके पैरों में। इसके साथ ही आपको अजीर्ण, गैस, अपच, मानसिक कष्ट एवं दस्त आदि जैसे रोग भी हो सकते हैं। आपको नींद न आने की बीमारी, रक्तविकार, फेफड़े के रोग एवं चर्मरोग भी हो सकते हैं।

आपके स्वभाव में आलस एवं जिद्दीपन हो सकता है। अपने व्यवसाय में हानि के कारण आपमें क्रोध, अविश्वास, झुंझलाहट एवं कटुता में वृद्धि होगी। आप अपने व्यवसाय से संबंधित लंबी यात्रायें कर

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

सकते हैं। यात्राओं के दौरान कष्ट एवं हानि की भी संभावना है। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं तो अपने वरिष्ठ अधिकारियों के विरोध का सामना कर सकते हैं तथा उनका कोपभाजन बन सकते हैं। आपकी पदोन्नति में रूकावट आ सकती है। अत: अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उत्तम संबंध बना कर रखें। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य करते हैं तो अपने साझेदारों पर नजर रखें एवं ऑख बंद कर किसी पर विश्वास न करें। सुखद पहलू यह है कि इन सबके बावजूद आपको कहीं से अचानक आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है।

इस चरण के दौरान आपके परिवार के अन्य सदस्यों - माता-पिता, नाना-नानी, एवं मामा पक्ष को भी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अनजाने में आपसे कुछ ऐसा कार्य हो सकता है, जिससे आपको हर समय पुलिस का भय सता सकता है। बेरोजगारी की स्थिति में आप आजीविका के लिए किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं एवं वहॉ उत्पन्न नये समस्याओं के कारण वह स्थान भी जल्द छोड़ने का निश्चय कर सकते हैं। इस दौरान आप कुछ ऐसे लोगों के संपर्क में आ सकते हैं जो गैरकानूनी कार्योंमें लिप्त हो सकते हैं। आपको उनसे दूर रहना चाहिए अन्यथा आप गहरी समस्या में फॅस सकते हैं।

इस चरण की समाप्ति से कुछ समय पहले आपको सम्मान प्राप्त हो सकता है। धीरे-धीरे आपको लाभ प्राप्त होगा एवं अधिकारी वर्ग भी आपके पक्ष में हो जायेंगे। आप व्यवसाय में हों या नौकरी में, आपको लाभ प्राप्त होगा। लेकिन ऐसा बहुत कम समय के लिए होगा। आप पुन: आर्थिक एवं शारीरिक समस्याओं से घिर सकते हैं। आप घर की अपेक्षा बाहर रहना अधिक पसंद कर सकते हैं। आप निम्न तबके के लोगों के संपर्क में आ सकते हैं।

यदि आपकी कुण्डली में शुक्र शनि के प्रभाव में है तो आपको इस चरण के दौरान पैतृक संपत्ति प्राप्त होसकती है। आपको कई स्रोतों से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आप शांतचित्त एवं एकांतप्रेमी हो सकते हैं। आपका मन भौतिक कार्यों के प्रति अधिक रहेगा। लेकिन, यदि आपकी कुण्डली में शनि पापी ग्रहों के प्रभाव में है तो आप गलत कार्यों के प्रति अग्रसित हो सकते हैं। आपको अपने कार्यों से ही अधिक नुकसान होगा। आप पर कोई आपराधिक मामला भी चल सकता है और उसकी वजह से आप अक्सर कोर्ट या थाने की चक्कर लगा सकते हैं। शुभ ग्रह की दशा के दौरान स्थिति कुछ ठीक रहेगी, लेकिन पापी ग्रह की दशा के दौरान आप अपना संतुलन खो सकते हैं। यदि आप अकेले कोई कार्य आरंभ करें, तो आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आप गुप्त रूप से कुछ धनार्जन भी कर सकते हैं।

द्वितिय ढ़ैया (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि -मेष

Start -03:06:2027

End -20:10:2027

Duration -0 y.4 m.17 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -23:02:2028

End -08:08:2029

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

Duration -1 y.5 m.14 d.

शनि साढ़े साती के दूसरे चरण के दौरान शनि का अपनी नीच राशि में होने के कारण आपको अपने पराक्रम, दाम्पत्य एवं कर्म क्षेत्रों से संबंधित घातक या अशुभ प्रभाव प्राप्त हो सकता है। आपका पराक्रम क्षीण हो सकता है और आपके गुप्त शत्रु सक्रिय हो सकते हैं और आपको हानि पहुँचा सकते हैं। जो लोग कभी आपसे भय खाते थे, वे भी आपको क्षति पहुँचा सकते हैं। आप अपनी ही कुछ गलतियों से काफी हानि उठा सकते हैं। हानि होने के बाद आपको अपने किये का पछतावा भी होगा एवं भविष्य में ऐसी गलती न करने की शपथ भी लेंगे, लेकिन आप पुनः वही गलती दोहराते रहेंगे एवं लोगों के हँसी केपात्र बनेंगे।

आपका स्वभाव धीरे-धीरे बदल सकता है और आप अपने कार्यों को पूरा करने के लिए झूठ का सहारा ले सकते हैं। आपके इस प्रयास में कार्य तो खराब होंगे ही, साथ में कुछ ऐसे गलत कार्य हो सकते हैं जोभविष्य में आपको अधिक हानि पहुँचा सकते हैं। आप शारीरिक रूप से निर्बल, हाथों में कष्ट, फेफड़ोंमें संक्रमण, खांसी, जुकाम, उदर-विकार एवं यौन रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपके दाम्पत्य जीवन में कटुता आ सकती है और अपने जीवनसाथी पर अविश्वास कर सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों से समस्या हो सकती है। आपका स्थानांतरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी छूट सकती है। आप पर विभिन्न प्रकार के दोषारोपन हो सकते हैं।

यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं तो आपको अचानक आर्थिक हानि हो सकती है। आपको अपने सभी प्रयत्नों में विफलता प्राप्त हो सकती है। आपके मन में अपने व्यवसाय के प्रति निराशा हो सकती है। आप इतने निराश हो सकते हैं कि अपना व्यवसाय बंद करने का भी निश्चय कर सकते हैं। व्यापार जगत में आपकी साख खराब हो सकती है और आपके कर्ज में बढ़ोतरी हो सकती है। आर्थिक संकट के इस दौर में आपके मित्रगण भी आपका साथ छोड़ सकते हैं एवं आपके साथ गैरों जैसा वर्त्ताव कर सकते है। आपके परिवार के लोग भी आप पर विश्वास नहीं करेंगे एवं आपमें ही कमी निकालेंगे। ऐसे में नौकरी या व्यवसाय में आपका मन नहीं लग सकता है। अक्सर कोई शारीरिक कष्ट उभर का सामने आ सकता है।

आप इतना निराश हो सकते हैं कि जीवन आपको बोझ लगने लगेगा। आप शारीरिक एवं मानसिक रूप सेकमजोर हो सकते हैं। आपमें जीवन के प्रति उत्साह में कमी हो सकती है। आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक परेशानियों से जूझते-जूझते आप व्यसन की ओर अग्रसित हो सकते हैं। इस वजह से आप समाज एवं परिवार में अपमानित हो सकते हैं एवं अपना मान-सम्मान खो सकते हैं।

इस चरण के अंतिम समय में स्थिति में कुछ सुधार हो सकती है। कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा होने पर अधिक अशुभ नहीं होगा। यदि आपकी आयु ३४ से ४२ साल के बीच है तथा किसी पापी ग्रह की दशा चल रही है तो आपको काफी कष्ट हो सकते हैं। आपको भाइयों का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप धर्मादि कार्यों से भी दूर रह सकते हैं। आपकी संगति बुरे लोगों से हो सकती है और आप गलत कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। आपको कारावास का भी भय हो सकता है। चरण के अंतिम चार माह में आपको आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको सम्मान भी मिलेगा और जो लोग आपको गलत समझते थे, उनकी सोच में बदलाव होगा।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

तृतिय ढ़ैया (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि -वृष

Start -08:08:2029

End -05:10:2029

Duration -0 y.1 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -17:04:2030

End -31:05:2032

Duration -2 y.1 m.14 d.

साढ़े साती के इस चरण में शनि आपके सुख, आयु तथा आय को प्रभावित करेगा। इस दौरान आपको मिला-जुला फल प्राप्त होगा, जिसमें शुभ फल की अधिकता होगी। आपकी आय में बढ़ोतरी होगी, लेकिन आप भौतिक वस्तुओं में अधिक खर्च कर सकते हैं। आपको अपने कर्मक्षेत्र में काफी सम्मान मिलेगा। जो लोग आपसे घृणा करते थे, वे भी आपका सम्मान करेंगे। शत्रु आपसे दया की भीख मांग सकते हैं, लेकिन आप अपने शत्रुओं को परास्त करने का निश्चय कर सकते हैं और आप इसमें सफल भी होंगे। धनवृद्धि का आपका हर प्रयास सफल होगा। आप जिस कार्य में भी हाथ डालेंगे, वह सफल होगा। आपका स्वास्थ्य पहले की तुलना में बेहतर होगा, लेकिन धन कमाने के चक्कर में आप मानसिक रूप से अशांत एवं अस्थिर रह सकते हैं। आपको कोई भी वाहन चलाते समय काफी सावधान रहना चाहिए, अन्यथा आप गंभीर दुर्घटनाओं के शिकार हो सकते हैं।

इस दौरान आप जो भी कार्य करेंगे उसमें आपको सफलता प्राप्त होगी। आपके मार्ग में आने वाली हर बाधा दूर होती जायेगी। आपका मन अपने व्यवसाय या नौकरी में रमा रहेगा। आपको अपनी मेहनत का पूर्ण फल प्राप्त होगा। इस समय आप कोई वाहन या घर खरीदने का भी निश्चय कर सकते हैं और यदि कोई अशुभ प्रभाव मौजूद नहीं है तो आप इसमें सफल भी होंगे। आप अपने परिवार वालों के लिए कंजूस हो सकते हैं। आप खुद पर, भौतिक वस्तुओं पर एवं घूमने-फिरने पर काफी खर्च कर सकते हैं, लेकिन परिवार के किसी सदस्य द्वारा कुछ मांगे जाने पर खफा हो सकते हैं। आपको अपनी आर्थिक स्थिति उत्तम बनाये रखने के लिए अपने खर्चों पर नियंत्रण करना चाहिए।

आपको अपने खान-पान पर विशेष ध्यान देना चाहिए। आपका स्वास्थ्य पुन: खराब हो सकता है। आपको अपने पैर जमीन पर टिका कर रखना चाहिए, अन्यथा आपको धोखा मिल सकता है। कुछ समय के लिए आपका बुरा समय पुन: शुरू हो सकता है। आपको आग का भय हो सकता है। किसी नुकीली चीज से या उॅचाई से गिरने के कारण आपको चोट भी लग सकती है। आप अपने जीवनसाथी से मानसिक रूप से दूर हो सकते हैं एवं नीचे तकबे के लोगों से संबंध बना सकते हैं। आपका अर्जित धन कोई आपसे ठग सकता है। लेकिन जब आपको अपने मित्रों से हानि मिलेगी एवं समाज में अपमान मिलेगा, तो आप संभल जायेंगे। इस चरण के अंतिम काल में आप काफी उन्नति कर सकते हैं। आप अपने परिवार वालों का भी ध्यान रखेंगे एवं आपको दोस्तों की भी पहचान हो जायेगी।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि -कर्क

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

Start -13:07:2034

End -27:08:2036

Duration -2 y.1 m.15 d.

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –वृश्चिक

Start -12:12:2043

End -23:06:2044

Duration -0 y.6 m.11 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -30:08:2044

End -08:12:2046

Duration -2 y.3 m.8 d.

शनि की साढ़ेसाती एवं ढैया के उपाय

शनि की साढ़ेसाती या ढैया के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए नीचे लिखे उपायों को करें–

मंत्र–

१) महामृत्युंजय मंत्र का सवा लाख जाप (रोज १0 माला, १२५ दिन) करें

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

–

ॐ त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

२) शनि के निम्नदत्त मंत्र का २१ दिन में २३ हजार जाप करें –

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ शं शनैश्चराय नमः।।

३) पौराणिक शनि मंत्र –

ॐ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

स्तोत्र–

नीचे लिखे शनि स्तोत्र का ११ बार पाठ करें या दशरथ कृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।।
तानि शनि–नामामि जपेदश्वत्थसन्निधौ।
शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद् भविष्यति।।

साढ़े साती पीडानाशक स्तोत्र – पिप्पलाद के अनुसार –

नमस्ते कोणसंस्थय पिंड्गलाय नमोस्तुते।
नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते यमदसंज्ञाय शनैश्वर नमोस्तुते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

रत्न–

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल या नाव के तली की कील का छल्ला बना कर मध्यमा उँगली में धारण करना चाहिए।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

व्रत–

शनिवार का व्रत रखना चाहिए एवं शनिदेव की पूजा करनी चाहिए। शनिवार व्रतकथा पढ़ने से भी लाभ प्राप्त होता है। व्रत के दौरान दिन में फलाहार करें तथा सायंकाल हनुमान जी या भैरव जी का दर्शन करनाचाहिए। रात्रि में काले उड़द की खिचड़ी (काला नमक मिला सकते हैं) या उड़द की दाल का मीठा हलवा ग्रहण कर सकते हैं।

औषधि–

हर शनिवार को सुरमा, काले तिल, सौंफ, और नागरमोथा मिले हुए जल से स्नान करना चाहिए।

दान–

शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए उड़द, तेल, नीलम, तिल, भैंस, लोहा एवं काला कपड़ा दान करना चाहिए।

मेष राशि वालों के लिए शनि की साढ़े साती एवं ढैया के सामान्य उपाय

१) साढ़ेसाती के आरंभ में ही काले घोड़े की नाल का छल्ला धारण करें।

२) प्रातः उठते ही सबसे पहले द्वादश ज्योर्तिलिंग (मल्लिकार्जुन, नागेश्वर, काशी विश्वनाथ, महाकालेश्वर, त्रियम्बकेश्वर, घुश्मेश्वर, औंकारेश्वर, ममलेश्वर, भीमाशंकर, केदारनाथेश्वर, बैद्यनाथेश्वर, सोमनाथेश्वर) का पाठ करें। तत्पश्चात् शनिदेव के दस नाम (शनि, सौरि, पंगु, यम, कृष्णयम, असित, अर्किमन्द, छायासुनु, रविज, छायात्मज) का पाठ करें।

३) नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना के साथ शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ करें एवं एक माला " ऊँ हं हनुमंते रूद्रात्मकाये हूं फट् " का जाप करें।

४) शनिदेव का व्रत रखें। शाम को काली उड़द की खिचड़ी से व्रत खोलें तथा शनिदेव के नाम पर छायादान करें।

५) प्रथम चरण में केले के वृक्ष में गुरूवार को सामान्य जल एवं शुद्ध घी का दीपक अर्पित करें। गाय कोभोग में दो आटे के पेड़े, गुड़ एवं गीले चने की दाल दें।

६) रात्रि में सूरमा लगायें। भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग करें।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

७) साढ़ेसाती के नेष्टफल की शांति के लिए शनि के बीज मंत्र या वैदिक मंत्र का २३,000 बार विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरांत दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा दान, लौहपात्र में तैलदान,शनिस्तोत्र का पाठ करें। इसके अलावा, शुभ बेला में नीलम रत्न एवं शनियंत्र धारण करना भी फायदेमंद होगा। लेकिन, रत्न धारण करने से पहले किसी दैवज्ञ या आचार्य या किसी व्यवसायिक ज़्योतिषी से सलाह अवश्य लें।

शनि की साढ़ेसाती एवं ढैया के विशेष उपाय

यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ है तो भैंरोजी एवं शनिदेव की पूजा-अर्चना कर शनि को और बल देकर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि शनि अशुभ या दूषित है तो शनि के उपाय कर अशुभ फल को खत्म एवं लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि आपकी कुण्डली में साढ़ेसाती चल रही है या आप शनिकृत कष्ट भोग रहें हैं तो नीचे लिखे उपायों को करने से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

१) शनि का छाया दान करें एवं नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।

२) शनिवार को काली गाय की सेवा करें। तिलक-बिन्दी कर उसके सींग पर कलावा बांध कर बूंदी के आठ लड्डू खिलायें एवं चरण स्पर्श करें।

३) काले कुत्ते को नियमित रूप से मीठी रोटी खिलायें।

४) यदि आपकी कुण्डली में शनि लग्न में बैठा है तो जमीन में सुरमा गाड़ें। वृक्ष की जड़ के साथ साथ सुरमा दूध में उबालें और फिर उसका नियमित तिलक करें।

५) शनिवार का व्रत रखें तथा पीपल की सेवा करें एवं मीठा जल अर्पित करें।

६) मद्यपान न करें।

७) शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के वृक्ष पर हनुमान जी का स्मरण कर तिल के तेल के दीपक में सिंदूर डालकर लाल पुष्प अर्पित करें।

८) भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग अवश्य करें।

९) शनिवार को काले घोड़े के पैर की मिट्टी काले कपड़े में बांधकर ताबीज के रूप में धारण करें।

१0) शनिवार को आप एक ही माप की आठ बोतलें लें और हर बोतल में एक ही माप का सरसों तेल भरें। प्रत्येक में आठ साबुत उड़द के दाने एवं एक कील डालें। फिर आठों बोतलों को अपने ऊपर से आठ बार उसार कर बहते जल में प्रवाहित करें। यह क्रिया लगातार आठ शनिवार करें।

११) नियमित रूप से शनि चालीसा एवं उनके १0८ नामों का उक्चारण करें।

१२) प्रातः उठते ही बासे मुख से शनिदेव के दस नामों का उक्चारण तथा द्वादशज़्योतिर्लिंग के नामों का उक्चारण करें।

१३) प्रत्येक शनिवार को काले कुत्ते को रोटी पर सरसों का तेल चुपड़ कर गुड़ रख कर खिलायें एवं बन्दरों को चने ख्यिलायें।

१४) शुक्रवार को लोहे के बर्त्तन में आठ किलो काले चने भिगों दें। शनिवार को काले कपड़े में सारे चनेरखें। साथ में ८00 ग्राम काली उड़द और इतने ही काले तिल के साथ इतने ही जौ एवं एक लोहे की पत्ती रखें। इसकी पोटली बनाकर ऐसे स्थान पर डालें जहॉ मछलियॉ हों। यह क्रिया लगातार आठ माह करें। शुरू में आठ माह करें, इसके बाद वर्ष में सिर्फ एक बार पर्याप्त होगा।

१५) अंधेरा होने के बाद आटा मिश्रित उड़द का दीपक बनाकर उसमें दो बत्ती जो जलने पर एक ही लौ दे, सरसों के तेल में जलायें। एक दीपक पीपल एवं एक दीपक वट वृक्ष पर अर्पित करें। साथ ही गुग्गुल

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

की धूप एवं चंदन की अगरबत्ती भी अर्पित करें। यह उपाय पहले शनिवार से शुरू करें।

१६) प्रथम शनिवार को आठ मीटर काले कपड़े में ८00 ग्राम की मात्रा में काली उड़द, चावल, गुड़, काली सरसों, काले तिल, जौ, आठ बड़ी कीलें तथा एक-एक सुरमा एवं इत्र की शीशी को कपड़े में बांधकर पोटली का रूप दे दें। अलग से १0 छिलके वाले बादाम लेकर किसी भी हनुमान मंदिर में जायें और पोटली एवं बादाम मंदिर में ही कहीं रख दें। फिर स्टील की कटोरी में सिंदूर को चमेली के तेल से गीला कर प्रसाद एवं पीले फूलों के साथ प्रभु को अर्पित करें। बैठ कर हनुमान चालीसा का पाठ करें और सात बार परिक्रमा दें। तत्पश्चात् पोटली मंदिर में ही छोड़ दें। दस बादाम में से आधे बादाम भी मंदिर में ही छोड़ दें और बाकी के बादाम लाकर किसी नये लाल कपड़े में बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रख दें। कष्टमुक्ति के साथ लाभ प्राप्त होगा।

१७) आठ शनिवार लगातार किसी ब्राह्मण को उड़द की दाल की खिचड़ी खिलायें। दान में काले कपड़े में उड़द की दाल की ही खिचड़ी बांधकर आठ सिक्के के रूप में दक्षिणा दें।

१८) पहले शनिवार को अपने से १६ गुना अधिक काला धागा लेकर उसे एक माला का रूप दें जो गले मेंपहनी जा सके। किसी भी शनि मंत्र से अभिमंत्रित कर धूप दिखायें। फिर उस माला को गले में धारण करें। तुरंत लाभ मिलेगा।

१६) शनिवार को घर के पूजास्थल में बैठ कर यह क्रिया करें। इस क्रिया में आठ उड़द मिश्रित दीपक बनाकर उसमें सरसों का तेल भरें। दीपक में दो बत्तियॉ बनाकर उन्हें एक साथ जलायें ताकि जलने पर एक ही लौ दे। दीपक में थोड़ा सा सिन्दूर के साथ काले घोड़े की नाल का छल्ला तथा एक कील डालें। काले हकीक की माला से काई भी शनिमंत्र का ११ माला जाप करें और प्रणाम कर उठ जायें। अगले दिन छल्ला निकालकर दायें हाथ की मध्यमा में धारण करें और दीपक किसी पीपल पर अर्पित कर दें।

२0) प्रत्येक शनिवार को आप चोकर सहित तीन मोटी रोटियॉ अपने ही हाथ से बनायें। एक रोटी के एक ओर सरसों एवं दूसरी ओर शुद्ध घी लगायें। अन्य दो रोटिओं में से एक पर घी और एक पर सरसों का तेल चुपड़ कर उस पर गुड़ रखें। दोनों ओर चुपड़ी रोटी काली गाय को, सरसों के तेल वाली रोटी कुत्ते को एवं घी चुपड़ी रोटी किसी गरीब मजदूर को दे दें।

२१) शमी वृक्ष या बिछुआ की जड़ को शनिपुष्य या शनिवार के श्रवण नक्षत्र में लाकर काले कपड़े में बांध कर अपनी दायीं भुजा पर बांधें। तुरंत लाभ होगा।

२२) किसी भी पहले शनिवार को आप आठ मीटर काला कपड़ा, एक जटा नारियल, काले तिल, काली उड़द, गुड़, जौ, काली सरसों, काला नमक प्रत्येक सामग्री ८00 ग्राम, हवन सामग्री, आठ बड़ी टोपीदार कील, इतने ही सिक्के तथा बोतल में ८00 ग्राम सरसों एवं चमेली का तेल, दो शीशी काजल तथा दो शीशी काले सुरमे लेकर कपड़े की पोटली बना दें। अपने सिर से सात बार उसार कर किसी डाकौत को दान कर दें। यह उपाय लगातार आठ माह करें। फिर वर्ष में दो बार कर सकते हैं।

२३) मांस-मदिरा से दूर रहें।

२४) किसी के सामने अपनी समस्याओं या कष्टों के बारे में बात न करें।

२५) घर के मुख्य द्वार की देहरी पर चांदी का पत्तर दबायें।

२६) काले वस्त्र धारण करें।

२७)घर के किसी अंधेरे भाग में किसी लोहे के पात्र में सरसों का तेल भरकर उसमें तांबे के सिक्के डालकर रखें।

२८) शनिदेव की कोई भी वस्तु बिना पैसे दिये किसी से भी न लें।

२६) काले घोड़े की नाल लाकर घर के मुख्य द्वार के नीचे दबायें।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

३0) शनिवार को काले घोड़े की पूॅछ के आठ बाल लेकर उन्हें किसी लकड़ी की डिब्बी में रखकर ४३ दिन तक अपने शयनकक्ष में रखें। अंतिम दिन बाल को जलाकर उसकी राख को सरसों के तेल में मिलाकर बहते जल में प्रवाहित कर दें।
३१) शुक्रवार को ८00 ग्राम काले तिल पानी में भिगो दें। अगले दिन उन्हें पीस कर गुड़ के साथ मिलाकर लड्डू बनायें और काले घोड़े को खिलायें। यह उपाय आठ शनिवार करें।
३२) साढ़ेसाती के दौरान अपनी पैतृक संपत्ति न बेचें। अधिक कष्ट में पड़ सकते हैं।
३३) रात्रि के समय सिर्फ शनि का दान करें, किसी को शनि की वस्तु न दें।
३४) नियमित रूप से महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें, कष्टों में कमी आयेगी।
३५) शनिवार को श्री भैंरों मंदिर में शराब अर्पित करें, कष्टों में कमी आयेगी।
३६) किसी शनिवार को वीराने स्थान में आठ शीशी सुरमें दबायें।
३७) शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करें।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

विंशोत्तरी दशाफल

राहु दशा (13:10:2003 से 13:10:2021)

वर्तमान समय में आपकी राहु की महादशा चल रही है और राहु आपकी कुण्डली में ग्यारहवें भाव में स्थित है। चूँकि ११वाँ भाव लाभ का है, अत: राहु की दशा के दौरान आप विदेशी संबंधों के द्वारा लाभ प्राप्त करेंगे। अनुचित तरीकों से धन कमाने से आप नहीं हिचकिचा सकते हैं। आप पूरे उत्साह से धन जुटाने में लगे रहेंगे। लेकिन इस प्रकार कमाया हुआ सारा धन यौन सुखों में बर्बाद होगा और दशा के समाप्त होने पर आपका कोष खाली हो सकता है। आप सट्टे और लॉटरी में धन बर्बाद करेंगे। यदि आपनेविवेक से काम नहीं लिया, तो आपको व्यापार में भारी नुकसान हो सकता है और आप कर्जदार हो सकते हैं। मित्रों और क्लबों से आप लाभ प्राप्त करेंगे। आपके पास काला धन आ सकता है। आपका परिवार तबाह हो सकता है। जीवनसाथी और संतान आपकी देखभाल नहीं कर सकते हैं।

वर्तमान समय में आपकी राहु की महादशा चल रही है और राहु आपकी कुण्डली में कन्या राशि में स्थितहै। राहु की अपनी दशा के दौरान, आपको सम्मान और खुशियाँ, भूमि का स्वामित्व, वाहन और नौकर चाकर प्राप्त होंगे। लेकिन सारे संग्रह और कब्जे दशा के खत्म होने पर समाप्त हो जायेंगे। आपकी विविध रूचियाँ होंगी। आप एक अभियंता और साथ ही एक आध्यात्मिक व्यक्तिहो सकते हैं। आप एक चिकित्सक और रहस्यमय व्यक्तिहो सकते हैं। आप परम्परागत और गैरपरम्परागत साधनों का उपयोग अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये करेंगे। भयानक दुर्घटना हो सकती है, जिससे आपके शरीर के कुछहिस्सों में चोट लग सकती है। आप सभी कार्य व्यस्थित तरीके से करेंगे। व्यवसायिक बैर आपकी मानसिक शान्ति को खत्म कर सकता है। औरतें आपके लिये भारी परेशानियाँ पैदा कर सकती हैं। आपकीनैतिकता संदेहास्पद हो सकती है।

लाल–किताब से उपाय

वर्त्तमान में आप राहु की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन-संपत्ति, लड़ाई-झगड़ा, विदेश निवास आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

उपाय–

१. सप्त धान्य (उड़द, मूंगी, गेहूँ, चना, जौं, चावल, कंगनी) का दान करें।
२. स्वर्ण पात्र या सोने का सांप दान करें।
३. राहु के बीज मंत्र का जप करें।

बुध अर्न्तदशा (25:09:2011 से 14:04:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अर्न्तदशा चल रही है। आपको संतानों से सुख और खुशियाँ प्राप्त होंगी। संबंधियों से आपके उत्तम रिश्ते बनेंगे। संतान की प्राप्ति हो सकती है। मित्रों के साथ आप आपके संबंध आनन्दायक और फलदायी होंगे। हालाँकि, आपमें हीनता कीभावना आ सकती है। आपके विचारों में स्पष्टता होगी।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

लाल–किताब से उपाय

वर्त्तमान में आप राहु की महादशा में बुध की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या व्यापार, जीवनसाथी, सांस आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए–

उपाय–

१. गोपालसहस्त्रनाम स्तोत्र का पाठ करें।
२. विष्णुसहस्त्रनाम स्तोत्र का पाठ करें।
३. लगातार ४३ दिन छोटी कन्याओं को मिठाई खिलायें।

राहु प्रत्यंतर्दशा (27:02:2013 से 16:07:2013)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अर्न्तदशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप जिन लोगों पर निर्भर हैं या विपत्ति में जिन्होंने आपकी मदद की है, उनको खतरा हो सकता है। आपको विभिन्न तरीकों से धन हानि हो सकती है।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

उपयुक्त रत्न का सुझाव

लग्नाधिपति के लिए रत्न

लग्नाधिपति -मंगल

आपका लग्न स्वामी मंगल है। लेकिन यह त्रिक भाव में स्थित है, इसलिए आपको मंगल के लिए रत्न धारण करने की सलाह नही दी जा सकती है।

नवमेश के लिए रत्न

नवमेश -चन्द्रमा

आपकी कुण्डली में नवमेश चन्द्रमा है। लेकिन यह त्रिक भाव में विराजमान है, इसलिए आपको चन्द्रमा ग्रह के लिए रत्न पहनना उपयुक्त नही हैं।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

योग–कारक ग्रह के लिए रत्न

आपकी कुण्डली में कोई योग–कारक ग्रह नहीं है।

तात्कालिक योग–कारक ग्रह के लिए रत्न

आपकी कुण्डली में कोइ तात्कालिक योग–कारक ग्रह नहीं है।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

जन्म राशि पर आधारित रूद्राक्ष का सुझाव

आपकी जन्म राशि मेष है। आपके लिए त्रिमुखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।

इस रूद्राक्ष के इष्ट देव अग्नि हैं। यह आत्म विश्वास बढ़ाता है, तनाव कम करता है, ताप से बचाता है, आग के भय को कम करता है एवं पापों को नष्ट करता है। तीनमुखी रूद्राक्ष धारण करने से विद्या की प्राप्ति होती है एवं स्त्री हत्या का दोष दूर होता है।

तीनमुखी रूद्राक्ष को रविवार के दिन सूर्योदय से पूर्व पवित्र होकर लाल धागे में पिरोकर ब्रह्मा विष्णु देवाय नमः का जप करते हुए गले में धारण करें।

आपकी जन्म राशि मेष है। आपके लिए पंचमुखी रूद्राक्ष उपयुक्त है।

इस रूद्राक्ष के इष्ट देव कालाग्नि रुद्र हैं। यह पॉचो तत्वों को दर्शाता है तथा स्वास्थ्य, सफलता, शांति तथा खुशहाल जीवन प्रदान करता है। इसे धारण करने से सारे पाप खत्म हो जाते हैं तथा ऐश्वर्य एवं मुक्ति प्राप्त होती है।

पॉचमुखी रूद्राक्ष को लाल धागे में पिरोकर शिव के पंचाक्षर मंत्र ॐ नमः शिवाय का यथाशक्ति जप कर गले में धारण करें।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

रूद्राक्ष धारण करने का उपयुक्त समय

सामान्यतया सोमवार को रूद्राक्ष धारण करना शुभ माना गया है, लेकिन शिवरात्रि को धारण करना उत्तम होता है। इसके अलावा रूद्राक्ष धारण करने के लिए शुभ समय निम्नलिखित हैं

शुभ महीना (माह)

आश्विन एवं कार्तिक माह - उत्तम
मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन माह - मध्यम
आषाढ़ एवं श्रावण माह - अधम
भाद्रपद, पौष एवं अधिक मास (मलमास) - अशुभ

शुभ दिन (वार)

जिस दिन ग्रह एवं नक्षत्र धारक के नाम-राशि के अनुकूल हों, उस दिन रूद्राक्ष धारण करना चाहिए। रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है, जबकि मंगलवार एवं शनिवार को अशुभ माना जाता है।

शुभ पक्ष

भौतिक सुख के लिए शुक्ल पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, जबकि आध्यात्मिक सुख के लिए कृष्ण पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

शुभ तिथि

द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णमासी को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है।

शुभ लग्न

रूद्राक्ष धारण करने के लिए मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुंभ लग्न शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र

स्वाति, विशाखा, रोहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, शतभिषा एवं श्रवण नक्षत्र में रूद्राक्ष धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। इसके अलावा, किसी भी ग्रहण, तुला, मकर संक्रांति, अयन, शिव चौदस, बसंत पंचमी एवं अमावस्या को भी रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने की शास्त्रोक्त विधि

प्रातः काल शौच क्रिया से निवृत होकर मुख शुद्धि करें। अशुद्ध मुँह से जप का उचित फल प्राप्त नहीं

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

हो सकता है।

मुखशुद्धि विहीनस्य न मंत्रः फलदायकः।
दंतजिव्हा विशुद्धिं च ततः कुर्यात् प्रयत्नतः ।।

इसके बाद स्नान के लिए यथासंभव शुद्ध जल लें। स्नान के बाद अपने चित्त को शांत कर पूजा पर बैठें। पूजा शुरू करने से पहले भूमि शुद्धि जरूर करें। भूमि शुद्धि मंत्र –

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।

पूजा पर बैठने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करें एवं पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। पूजा में शुद्ध जल से भरा पात्र रखें। पात्र पर नारियल रखकर प्राण–प्रतिष्ठा करें। फिर अपने कुलदेवता सहित सारेदेवी–देवताओं का आह्वान कर रूद्राक्ष की पूजा करें।

सबसे पहले गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि पंचगव्य से रुद्राक्ष को स्नान करायें फिर गंगाजल या शुद्धजल से पुनः स्नान करायें। अब कांसे की थाली में पीपल के नौ पत्ते लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल का आकार बनायें और एक पत्ता बीच में रखें। बीच वाले पत्ते पर रुद्राक्ष रखें। फिर ॐ नमः शिवाय मंत्र का तीन बार जाप करें। अब स्वयं पर एवं पूजा के उपयोग की सभी वस्तुओं पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का तीन बार जाप करें –

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।
ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।

अब अपने दायें हाथ में आचमनी से गंगाजल लेकर प्रत्येक निम्न मंत्र का जाप करते हुए पीयें –

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

अब निम्न मंत्र का जाप करते हुए हाथ धोकर जल जमीन पर छोड़ दें –

ॐ गोविन्दाय नमः।

अब दायें हाथ में गंगाजल लेकर प्राणायाम के विनियोग का निम्न मंत्र पढ़कर जल जमीन पर छोड़ दें –

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः प्राणायामे विनियोगः।

फिर निम्न मंत्र से तीन प्राणायाम करें –

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

ॐ भू: ॐ भुव: ॐ स्व: ॐ मह: ॐ जन: ॐ तप: ॐ सत्यम।
ॐ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो यो न: प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योति: रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुव: स्वरोम्।

अब रुद्राक्ष पर कुश या आचमनी से जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का जाप करें –

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय नमो नम: ।
भवे भवेनाति भवेभावस्वमान भवोद्भवाय नम: ।।

फिर फूल में चंदन एवं सुगंधित तेल लगाकर उससे रुद्राक्ष को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का जाप करें –

ॐ वामदेवाय नम:, ॐ ज्येष्ठाय नम:, ॐ श्रेष्ठाय नम:, ॐ रुद्राय नम:, ॐ कलविकरणाय नम:, ॐ बलविकरणाय नम:, ॐ बलाय नम:, ॐ बलप्रमथनाय नम:, ॐ सर्वभूतदमनाय नम:, ॐ मनोन्मनाय नम:।

फिर रुद्राक्ष को धूप दिखाते हुए निम्न मंत्र का जप करें –

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्यो: घोर घोरतरेभ्य:।
सर्वेभ्य: सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्य: ।।

फिर रुद्र गायत्री मंत्र जपते हुए फूल से चंदन एवं सुगंधित तेल का लेप करें।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्र: प्रचोद्यात्।

चंदन का लेप करने के पश्चात् रुद्राक्ष के दाने पर ध्यान लगाकर ईशान मंत्र का जाप करें।

ॐ ईशान: सर्वविद्यानामीश्वर: सर्वभूतानां।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपति: ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ।।

त्रिमुखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग –

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य श्री अग्नि मंत्रस्य वसिष्ठ ऋषि:, गायत्री छन्द:, अग्नि देवता, ह्रीं बीजं, ह्रूं शक्ति:, चतुर्वर्ग सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे च जपे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमश: शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों का स्पर्श करें ।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

ॐ वसिष्ठ ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः मुखे, अग्निदेवतायै नमः हृदि, ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये, ह्रूं शक्तये नमः पादयो, विनियोगायै नमः सर्वांगे।

करन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल–करपृष्ठ का स्पर्श करें ।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ रं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ इं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ ह्रूं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ॐ करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर, दोनों भुजाओं एवं ऑखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी एवं मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ रं शिरसे स्वाहा, ॐ इं शिखायै वषट्, ॐ ह्रीं कवचाय हुम्। ॐ ह्रूं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ॐ अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र –

सबसे पहले रूद्राक्ष के इष्ट देव अग्नि देवता का ध्यान करें।

अष्टशक्तिं स्वस्तिकामातिमुचैर्दीर्घैरेभिर्धारयन्त जपाभम्।
हेमकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्वहिनं बद्धमौलिं जराभिः।।

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्त्तन में रुद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रूद्राक्ष पर जल छींटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१–ॐ धुं धुं नमः
२–ॐ वुम्
३–ॐ ॐ नमः
४–ॐ क्लीं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)
५–ॐ रं ह्रैं ह्रीं ह्रूं औं (मूल मंत्र)
६–ह्र नमः शिवाय
७–ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्।

पंचमुखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

विनियोग –

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य श्री मंत्रस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्री छन्दः, सदाशिव कालाग्नि रुद्रो देवता, ॐ बीजं, स्वाहा शक्तिः, रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों का स्पर्श करें ।

ब्रह्मऋषिः नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः मुखे, सदाशिव कालाग्निरुद्रो देवतायै नमो हृदि, ॐ बीजाय नमो गुह्ये, स्वाहा शक्तिः नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल–करपृष्ठ का स्पर्श करें ।

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रां तर्जनीभ्यां नमः, ॐ आं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ क्ष्म्यौं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर, दोनों भुजाओं एवं ऑखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी एवं मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्रां शिरसे स्वाहा, ॐ आं शिखायै वषट्, ॐ क्ष्म्यौं कवचाय हुम्। ॐ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र –

सबसे पहले रूद्राक्ष के इष्ट देव कालाग्नि रुद्र का ध्यान करें।

हावभावविलसार्द्धनारिकं भीषणार्धमथवा महेश्वरम्।
दाशसोत्पलकपालशूलिनं चिन्तये जपविधौ विभूतये।।

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्त्तन

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

में रुद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रूद्राक्ष पर जल छींटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१-ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा (मूल मंत्र)
२-ॐ श्रीं नमः
३-ॐ ह्राम्
४-ॐ हूं नमः
५-ॐ ह्रीं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)
६-ॐ नमः शिवाय
७-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्।

रूद्राक्ष धारण करने के साधारण नियम

किसी भी सोमवार या शुभ दिन को सबसे पहले रुद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करायें। फिर रुद्राक्ष पर चंदनका लेप लगायें। तत्पश्चात्, रुद्राक्ष पर धूप, दीप आदि दिखाकर सफेद फूल अर्पित करें। उसके बाद शिवलिंग से रुद्राक्ष को स्पर्श कराते हुए कम से कम ग्यारह बार ॐ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। भगवान शिव को ध्यान करते हुए रुद्राक्ष धारण करें या पूजास्थल पर रख सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने के पश्चात् निम्न नियमों का पालन करना चाहिए ।

मद्यं मांसं च लासुनं पलांडुं शिग्रुं एव च ।
श्लेषं अंतकं विड्वाराहं भक्षयं वर्जये नरः ।।

रूद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मांस, मदिरा, कोई नशीला पदार्थ, लहसुन, प्याज या कोई अन्य तामसिक पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक आहार लें।

रूद्राक्ष को दिखावे की चीज न बनायें।

रात में रूद्राक्ष उतार कर पूजा के स्थान पर रख दें एवं सुबह सारे क्रिया-कर्म से निवृत होकर ॐ नमः शिवाय का पॉच बार जप कर धारण करें। जब भी माला उतारें तो उतार कर पूजास्थल पर ही रखें।

अभिमान न करें।

परोपकार करें।

रूद्राक्ष का अपमान या दुरूपयोग न

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

करें।

क्रोध न करें।

अपना आचरण एवं विचार पवित्र रखें।

किसी को अपशब्द न कहें।

ब्रह्मचर्य का पालन करें।

रूद्राक्ष का गंगाजल से अभिषेक करें।

नहाते समय साबुन आदि न लगायें।

रूद्राक्ष धारण करते समय या पूजा करते समय स्थान शुद्धि अवश्य करें।

रूद्राक्ष की पवित्रता बनाये रखें।

हमेशा नित्यकर्म से निवृत होकर एवं पवित्र होकर ही रूद्राक्ष धारण करें।

किसी व्यक्ति या धर्म आदि की निंदा न करें।

गंदगी से दूर रहें।

रूद्राक्ष के पति निष्ठा रखें।

काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि का त्याग करें।

रुद्राक्ष माला को कभी भी खूंटी पर न लटकायें।

रुद्राक्ष माला रजस्वला स्त्री से दूर रखें।

शवयात्रा में माला पहनकर न जायें।

विशेष नोट –

असली रूद्राक्ष गर्म होता है, इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रूद्राक्ष कीजगह आपको भद्राक्ष पहनना

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

चाहिए।

भद्राक्ष भी रूद्राक्ष जैसा ही होता है लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकरका आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार तथा दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने में लाभदायक है।

भद्राक्ष के लिए

ओऽम् गौरी शंकराय नमः।

भद्राक्ष के लिए शुभ

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके
श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।

रूद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जॉच

जॉच संख्या १ –

पानी की उपरी सतह पर रूद्राक्ष रखने से यदि यह डुब जाता है तो रूद्राक्ष असली है, लेकिन यदि यह तैरता रहता है, तो रूद्राक्ष झूठा है।

जॉच संख्या २ –

असली रूद्राक्ष बहुत उष्म होता हैं और यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तॉबे को अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि रूद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटका कर तॉबे के चादर के छोटे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल–गोल घूमने लगेगें। यदि इनके घूमने की दिशा घड़ी कीसूईयों की घूमने की दिशा के समान है तो ये असली हैं।

जॉच संख्या ३ –

एक कप दूध के अंदर रूद्राक्ष के मोती को डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखिये। यदि दूध खराब नही होता है तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो झूठा है।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

अंकशास्त्र से रत्न, मंत्र, यंत्र, रूद्राक्ष और उपाय

आपका जन्म दिनांक १८:१०:१९७८ है।

आपका मूलांक ९ है।

आपके मूलांक का अधिपति ग्रह मंगल है।

ईष्ट देवता

हनुमान जी आपके ईष्ट देव हैं। वह स्वार्थरहित सेवा की प्रतीक हैं। वह अभिमान रहित हैं, और भगवान विष्णु के अवतार भगवान श्री राम के विनम्र सेवक हैं। उनका मानना है, कि उनकी सारी शक्तियाँ उनकी अपनी नहीं हैं, वह उन्हें उनके प्रभु श्री राम के कारण हैं। आपको इस बात को उचित और स्पष्टरूप से समझना चाहिये, और अपनी शक्तियों के लिये किसी प्रकार का कोई अभिमान नहीं करना चाहिये। आपको अपने आराध्य हनुमान जी से पूर्ण समर्पण के गुण को सीखना चाहिये, और दैनिक जीवन में उसका प्रयोग करना चाहिये।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

ध्यान और उपासना

आपको हनुमान जी या मूँगा का ध्यान करना चाहिये। यह ध्यान आपको सुबह सूर्योदय के आधा घंटा पूर्वया पश्चात करना चाहिये। आप ताम्रपत्र पर अंकित मंगल यंत्र का प्रयोग कर सकते हैं।

जप मंत्र

किसी भी ग्रह के लिये मंत्र का जप चन्द्रमा के बढते हुये चक्र के दौरान पूरा करना चाहिये, और उसे बतायी गयी संख्या में दोहराना चाहिये। आपको इस मंत्र का प्रतिदिन १०८ बार जाप करना चाहिये।

ॐ नमो हनुमते हुं ॐ

मंगल ग्रह के लिए व्रत

बहुत सारे लोगों के लिए सही तरीके से मंत्र का जप करना किसी भी कारण से थोड़ा मुश्किल हो सकता है। उनके लिए समस्याकारक ग्रह के शासित दिन व्रत रखना ग्रह शांति का एक सरल उपाय है। नीचे ग्रहों के शासित दिन दिए गये हैं।

मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम २१ और अधिकतम ४५ मंगलवार को रखनी चाहिए। अगर संभव हो तो आप पूरी जिन्दगी भी इस व्रत को रख सकते हैं। व्रत के दिन केवल गुड़ का हलवा खाना बेहतर होगा। आप अपनी शक्ति के अनुसार गरीबों के बीच भी हलवा वितरित कर सकते हैं। व्रत तोड़ने से पहले आपको लाल कपड़ा पहनना चाहिए और मंगल के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का अपने उपलब्ध समयानुसार १, ५ या ७ माला का जप करना चाहिए। सॉड़ को गुड़ खिलाना चाहिए। इस व्रत को रखने से आप ऋणमुक्त होंगे, संतान की प्राप्ति होगी एवं अपने शत्रुओं

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

पर विजय प्राप्त होगी। अंतिम मंगलवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें और लाल कपड़ा, तांबा, मसूर, गुड़ एवं नारियल गरीबों के बीच दान करें।

अपने माता-पिता एवं बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करें। इससे आप दीर्घायु, खुशहाल एवं सुखी-संपन्न होंगे, क्योंकि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा करेगें, उनकी उचित देखभाल करेगें तो आपको भी अपनी औलाद से सम्मान एवं सुख प्राप्त होगा।

जैसी करनी, वैसी भरनी कहावत के अनुसार आपको हमेशा अपने कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होगा। सत्कर्म से आपको मानसिक शांति, खुशी एवं अन्न-धन प्राप्त होगें तो बुरे कर्मों के कारण आप अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

मंगल ग्रह के पीड़ा की शांति हेतु जड़ियों का प्रयोग

ग्रह पीड़ा शांति की कई विधियॉ हैं, जैसे दान करना, मंत्र का जप करना, रत्न धारण करना आदि। जड़ी धारण करना भी ग्रह शांति का एक आसान तरीका है और यह लाभदायक भी है।

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

मंगल के लिए अनन्त मूल या नागफनी (गो जिव्हा संगमुसी नाग जिव्हा) की जड़ को लाल कपड़े में सिलकर मंगलवार या मृगशिरा, चित्रा या घनिष्ठा नक्षत्र में सूर्योदय के समय गले, जेब, भुजा या कमर मेंधारण करें।

मंगल ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को शांत करने के लिए हवन में प्रयुक्त सामग्री

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियॉ मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री - सोंठ, चमेली का तेल, कुमकुम
जड़ी - सौंफ की जड़, नाग जिव्हा, अनन्त मूल

मंगल ग्रह के लिए स्नान व दान

लाल फूल, लाल चंदन, घी, गेंहू, मसूर या ताम्बे के बर्तन में सुपारी भरकर दान करने से मंगल प्रसन्न होते हैं। मंगल की प्रसन्नता के लिए स्नान करते समय जल में बेलपत्र या लाल चंदन डालकर स्नान करनाचाहिए।

अंकशास्त्र से रत्न धारण करने का सुझाव

लाल मूंगा की भौतिक संरचना

मूंगा एक चमकदार रत्न है जो लाल, गुलाबी एवं लाल-संतरी रंगों में पाया जाता है। कार्नेलियन एवं ब्लडस्टोन मूंगा के उपरत्न हैं।

लाल मूंगा धारण करने के फायदे

मूंगा धारण करने से बाधायें दूर होती हैं। इससे दुर्घटनाओं, कलह एवं झगड़ों का निवारण होता है। इससेधन-संपत्ति, जायदाद आदि में वृद्धि होती है तथा धारक कर्ज से मुक्त होता है। इससे समृद्धि आती है एवं मांगलिक दोष का निवारण होता है। धारक का वैवाहिक जीवन खुशहाल होता है। मूंगा धारण

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

करने से मंगल के कुप्रभाव से होने वाले रोग दूर होते हैं। यह फोड़े-फुंसी ठीक करने के अलावा खून भीसाफ करता है। महिलाओं को गर्भधारण एवं प्रसव के दौरान मदद मिलती है। यह धारक में उत्साह, अनुराग, प्रेम आदि की वृद्धि करता है। इससे सफलता एवं खुशहाली प्राप्त होती है।

रोगों पर लाल मूंगा का प्रभाव

मूंगा धारण करने या मूंगे की भस्म का सेवन करने से निम्नलिखित रोग दूर होते हैं - रक्त-विकार, खांसी, मंदाग्नि, शारीरिक दुर्बलता, प्लीहा, मिर्गी, हृदय रोग, वायु कफ इत्यादि।

लाल मूंगा धारण करने के लिए महत्त्वपूर्ण निर्देश

बढ़िया चमक, साफ रंग वाला एवं धब्बारहित मूंगा ही धारण करना चाहिए, इससे भाग्य में बढ़ोतरी होगी।मूंगा सोने से बनी अँगूठी या लॉकेट में पहनना चाहिए। मूंगा इस तरह धारण करना चाहिए कि यह निरंतर त्वचा के संपर्क में रहे। इसलिए, अँगूठी में धारण करना ज़्यादा लाभदायक होगा। मूंगा का वजन ३-११ रत्ती (कम-से-कम ६ रत्ती) होना चाहिए। मंगलवार के दिन जब मेष या वृश्चिक राशि पर चंद्रमा या मंगल हो और उस दिन मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा या धनिष्ठा नक्षत्र भी हो तो प्रातः काल से ११ बजे के बीच सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वायें। रवि-मंगल के योग में सोने की अंगूठी में तथा चंद्र-मंगल के योग में चांदी की अंगूठी में मूंगा जड़वाना उत्तम होता है।

मंगलवार के दिन बाद स्नान कर साफ वस्त्र धारण करें। इसके पश्चात् पूर्वाभिमुख होकर भगवान गणेश की मूर्त्ति के सामने पूजा पर बैठें। सबसे पहले घी का दीपक एवं अगरबत्तियां जलायें एवं देवता के आगे फूल, फल एवं मिठाईयां चढ़ायें। फिर रत्न जड़ित अंगूठी या लॉकेट को पंचामृत (दूध, दही, घी, चीनी एवं शहद) से धोयें। इसके पश्चात् अंगूठी या लॉकेट को गंगाजल या शुद्ध जल से धोकर देवता के चरणों में अर्पित करें।

अब सबसे पहले मंगल देवता के बीज मंत्र का १९ बार जाप करें। फिर ध्यान मंत्र एवं ऋगवेद मंत्र का एक-एक बार जाप करें। तदुपरान्त, अंगारक अष्टोत्तर शतनामावली (मंगल ग्रह के १०८ नाम) का जाप करें। इसके उपरांत मंगल देवता का ध्यान करते हुए दण्डवत प्रणाम करें एवं आस्थापूर्वक अंगूठी को

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें या लॉकेट को गले में धारण करें।

लाल मूंगा दान की विधि

मंगल यंत्र

8	3	10
9	7	5
4	11	6

ताम्र पत्र पर मंगल यंत्र खुदवाकर उसके मध्य में मूंगा जड़वाकर उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिर मंगल मंत्र से मूंगा को अभिमंत्रित करें। फिर ७ दिनों तक यंत्र का विधिवत् पूजन करें एवं आठवें दिन पीले रंगकी गाय, सोना, गेंहू, मसूर, गुड़, घी, लाल वस्त्र, केसर एवं दक्षिणा सहित यंत्र ब्राह्मण को दान कर दें। इस प्रकार दान करने से मंगल से संबंधित अरिष्ट दूर होते हैं, आयु की वृद्धि होती है एवं मनोकामनापूर्ण होती है।

लाल मूंगा के प्रभाव की अवधि

अंगूठी में जड़वाने के दिन से शुरू कर ३ वर्ष ३ दिन तक मूंगा प्रभावशाली रहता है एवं उसके बाद मूंगाका प्रभाव नष्ट हो जाता है। अत: उपरोक्त अवधि के बाद मूंगा बदल देना चाहिए।

भाग्यांक पर आधारित रूद्राक्ष का सुझाव

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

आपका जन्म दिनांक १८:१०:१९७८ है।

आपका भाग्यांक ८ है।

आपका भाग्यांक ८ है, इसलिए आपके लिए आठ मुख वाला रूद्राक्ष उपयुक्त है।

इस रूद्राक्ष के इष्ट देव विघ्नविनाशक गणेश हैं। ये सब रूकावटों को दूर करते हैं तथा सभी दिशाओं में सफलता सुनिश्चित करते हैं। इसे धारण करने से अन्न-धन की कमी नहीं होती, असमय मृत्यु नहीं होती एवं मरणोपरांत धारक शिवगण बन जाता है।

आठमुखी रूद्राक्ष को लाल धागे में पिरोकर श्री गणेश का चरण स्पर्श कराकर ॐ सदा मंगल गणेशाय नमः मंत्र का जप करते हुए धारण करें।

रूद्राक्ष धारण करने का उपयुक्त समय

सामान्यतया सोमवार को रूद्राक्ष धारण करना शुभ माना गया है, लेकिन शिवरात्रि को धारण करना उत्तम होता है। इसके अलावा रूद्राक्ष धारण करने के लिए शुभ समय निम्नलिखित हैं

शुभ महीना (माह)

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

आश्विन एवं कार्तिक माह – उत्तम
मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन माह – मध्यम
आषाढ़ एवं श्रावण माह – अधम
भाद्रपद, पौष एवं अधिक मास (मलमास) – अशुभ

शुभ दिन (वार)

जिस दिन ग्रह एवं नक्षत्र धारक के नाम–राशि के अनुकूल हों, उस दिन रूद्राक्ष धारण करना चाहिए। रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है, जबकि मंगलवार एवं शनिवार को अशुभ माना जाता है।

शुभ पक्ष

भौतिक सुख के लिए शुक्ल पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, जबकि आध्यात्मिक सुख के लिए कृष्ण पक्ष में रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

शुभ तिथि

द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णमासी को रूद्राक्ष धारण करना उत्तम होता है।

शुभ लग्न

रूद्राक्ष धारण करने के लिए मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुंभ लग्न शुभ होता है।

शुभ नक्षत्र

स्वाति, विशाखा, रोहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, हस्त, अश्विनी, धनिष्ठा, शतभिषा एवं श्रवण नक्षत्र में रूद्राक्ष धारण करने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। इसके अलावा, किसी भी ग्रहण, तुला, मकर संक्रांति, अयन, शिव चौदस, बसंत पंचमी एवं अमावस्या को भी रूद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

रूद्राक्ष धारण करने की शास्त्रोक्त विधि

प्रातः काल शौच क्रिया से निवृत होकर मुख शुद्धि करें। अशुद्ध मुँह से जप का उचित फल प्राप्त नहीं होसकता है।

मुखशुद्धि विहीनस्य न मंत्रः फलदायकः।
दंतजिव्हा विशुद्धिं च ततः कुर्यात् प्रयत्नतः ।।

इसके बाद स्नान के लिए यथासंभव शुद्ध जल लें। स्नान के बाद अपने चित्त को शांत कर पूजा पर बैठें। पूजा शुरू करने से पहले भूमि शुद्धि जरूर करें। भूमि शुद्धि मंत्र –

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

पूजा पर बैठने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करें एवं पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। पूजा में शुद्ध जल से भरा पात्र रखें। पात्र पर नारियल रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिर अपने कुलदेवता सहित सारेदेवी-देवताओं का आह्वान कर रूद्राक्ष की पूजा करें।

सबसे पहले गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि पंचगव्य से रुद्राक्ष को स्नान करायें फिर गंगाजल या शुद्धजल से पुनः स्नान करायें। अब कांसे की थाली में पीपल के नौ पत्ते लेकर आठ पत्तों से अष्टदल कमल का आकार बनायें और एक पत्ता बीच में रखें। बीच वाले पत्ते पर रुद्राक्ष रखें। फिर ॐ नमः शिवाय मंत्र का तीन बार जाप करें। अब स्वयं पर एवं पूजा के उपयोग की सभी वस्तुओं पर जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का तीन बार जाप करें -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।
ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।

अब अपने दायें हाथ में आचमनी से गंगाजल लेकर प्रत्येक निम्न मंत्र का जाप करते हुए पीयें -

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

अब निम्न मंत्र का जाप करते हुए हाथ धोकर जल जमीन पर छोड़ दें -

ॐ गोविन्दाय नमः।

अब दायें हाथ में गंगाजल लेकर प्राणायाम के विनियोग का निम्न मंत्र पढ़कर जल जमीन पर छोड़ दें -

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः परमात्मा देवता देवी गायत्री छंदः प्राणायामे विनियोगः।

फिर निम्न मंत्र से तीन प्राणायाम करें -

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतिः रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

अब रुद्राक्ष पर कुश या आचमनी से जल छिड़कते हुए निम्न मंत्र का जाप करें -

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय नमो नमः ।
भवेभवेनाति भवेभावस्वमान भवोद्भवाय नमः ।।

फिर फूल में चंदन एवं सुगंधित तेल लगाकर उससे रुद्राक्ष को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र का जाप करें -

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

ॐ वामदेवाय नमः, ॐ ज्येष्ठाय नमः, ॐ श्रेष्ठाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ कलविकरणाय नमः, ॐ बलविकरणाय नमः, ॐ बलाय नमः, ॐ बलप्रमथनाय नमः, ॐ सर्वभूतदमनाय नमः, ॐ मनोन्मनाय नमः।

फिर रुद्राक्ष को धूप दिखाते हुए निम्न मंत्र का जप करें –

ॐ अघोरेभ्यो अघघोरेभ्यो: घोर घोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः ।।

फिर रुद्र गायत्री मंत्र जपते हुए फूल से चंदन एवं सुगंधित तेल का लेप करें।

ॐ तत्पुरुषाय विद्‌महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोद्‌यात्‌।

चंदन का लेप करने के पश्चात् रुद्राक्ष के दाने पर ध्यान लगाकर ईशान मंत्र का जाप करें।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ।।

अष्टमुखी रूद्राक्ष धारण करने के विशेष नियम

विनियोग –

दायें हाथ में आचमनी में गंगाजल लेकर निम्न विनियोग मंत्र का जाप करें एवं जल को जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य श्री गणेश मंत्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री विनायको देवता, ग्रीं बीजम्, आं शक्तिः, मम अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए दायें हाथ से अपने शरीर के अंगों क्रमशः शिरसि, मुख, हृदय, गुह्य एवं पैरों का स्पर्श करें ।

ॐ भार्गव ऋषये नमः शिरसिः, अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे, विनायको देवतायै नमः हृदि, ग्रीं बीजाय नमो गुह्ये, आं शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास –

निम्नलिखित मंत्र का जाप करते हुए अपनी हथेली के क्रमशः अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका अंगुली एवं करतल–करपृष्ठ का स्पर्श करें ।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

ॐ भार्गव ऋषये नमः शिरसि:, अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे, विनायको देवतायै नमः हृदि,
ग्रीं बीजाय नमो गुह्ये, आं शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वाँगे।

हृदयादिन्यास –

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ते हुए क्रमशः हृदय, सिर, दोनों भुजाओं एवं ऑखों को स्पर्श करें एवं अंतिम मंत्र से दायें हाथ को सिर के उपर से पीछे की तरफ घुमाते हुए सामने लायें एवं तर्जनी एवं मध्यमा से बायें हाथ पर ताली बजायें।

ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्रां शिरसे स्वाहा, ॐ ग्रीं शिखायै वषट्, ॐ लं कवचाय हुम्।
ॐ आं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ श्रीं अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र –

सबसे पहले रूद्राक्ष के इष्ट देव विघ्नविनाशक गणेश का ध्यान करें।

हरतु कुलगणेशो विघ्नसेधानशेषान्।
जयतु च सकलं सम्पूर्णतां साधकानाम्।।
पिबतु बटुकनाथः शोणितं निंदकानाम्।
दिशतु सकलकामान् कौलिकानां गणेशः।।

नीचे दिए गए किसी एक मंत्र के ग्यारह माला का जाप करें। माला जप करने के बाद किसी तांबे के बर्त्तन में रुद्राक्ष रखें। प्राणायाम करने के बाद जल से भरा पात्र बायें हाथ में लेकर दायां हाथ पात्र के नीचे छुआकर हटा लें। फिर रूद्राक्ष पर जल छींटें एवं रूद्राक्ष धारण करें।

१-ॐ ह्रां ग्रीं लं आं श्रीम् (मूल मंत्र)
२-ॐ कं वं नमः
३-ॐ कम्
४-ॐ सः हूं नमः
५-ॐ हुं नमः (पंचाक्षरी मंत्र)
६-ॐ नमः शिवाय
७-ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिंपुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिवबंधनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्।

रूद्राक्ष धारण करने के साधारण नियम

किसी भी सोमवार या शुभ दिन को सबसे पहले रुद्राक्ष को गंगाजल से स्नान करायें। फिर रुद्राक्ष पर चंदनका लेप लगायें। तत्पश्चात्, रुद्राक्ष पर धूप, दीप आदि दिखाकर सफेद फूल अर्पित करें। उसके बाद शिवलिंग से रुद्राक्ष को स्पर्श कराते हुए कम से कम ग्यारह बार ॐ नमः शिवाय मंत्र का जाप करें। भगवान शिव को ध्यान करते हुए रुद्राक्ष धारण करें या पूजास्थल पर रख सकते हैं।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

रूद्राक्ष धारण करने के पश्चात् निम्न नियमों का पालन करना चाहिए ।

मद्यं मांसं च लासुनं पलांडुं शिग्रुं एव च ।
श्लेषं अंतकं विड्वाराहं भक्षयं वर्जये नरः ।।

रूद्राक्ष धारण करने के पश्चात् मांस, मदिरा, कोई नशीला पदार्थ, लहसुन, प्याज या कोई अन्य तामसिक पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक आहार लें।

रूद्राक्ष को दिखावे की चीज न बनायें।

रात में रूद्राक्ष उतार कर पूजा के स्थान पर रख दें एवं सुबह सारे क्रिया-कर्म से निवृत होकर ॐ नमः शिवाय का पॉच बार जप कर धारण करें। जब भी माला उतारें तो उतार कर पूजास्थल पर ही रखें।

अभिमान न करें।

परोपकार करें।

रूद्राक्ष का अपमान या दुरूपयोग न करें।

क्रोध न करें।

अपना आचरण एवं विचार पवित्र रखें।

किसी को अपशब्द न कहें।

ब्रह्मचर्य का पालन करें।

रूद्राक्ष का गंगाजल से अभिषेक करें।

नहाते समय साबुन आदि न लगायें।

रूद्राक्ष धारण करते समय या पूजा करते समय स्थान शुद्धि अवश्य करें।

रूद्राक्ष की पवित्रता बनाये रखें।

हमेशा नित्यकर्म से निवृत होकर एवं पवित्र होकर ही रूद्राक्ष धारण करें।

किसी व्यक्ति या धर्म आदि की निंदा न

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058

करें।

गंदगी से दूर रहें।

रूद्राक्ष के पति निष्ठा रखें।

काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि का त्याग करें।

रुद्राक्ष माला को कभी भी खूंटी पर न लटकायें।

रुद्राक्ष माला रजस्वला स्त्री से दूर रखें।

शवयात्रा में माला पहनकर न जायें।

विशेष नोट –

असली रूद्राक्ष गर्म होता है, इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रूद्राक्ष कीजगह आपको भद्राक्ष पहनना चाहिए।

भद्राक्ष भी रूद्राक्ष जैसा ही होता है लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकरका आर्शीवाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार तथा दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने में लाभदायक है।

भद्राक्ष के लिए

ओऽम् गौरी शंकराय नमः।

भद्राक्ष के लिए शुभ

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके
श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।

Licensed to - Abhimanue Singh Contact :09818193410, 09350247058